दसखी के भजन और लोक-गीत

सकलन और सपादन

श्री प्रभूदयाल मीतल

विषय-सूची

विषय		पृष्ठांक

पृष्ठांक

विषय	पृष्ठांक

राजस्थानी

मालवी-निमाडी

विषय	पृष्ठांक

प्राक्कथन

हिंदी साहित्यकारो में कबीर, तुलसी और मीरा की जितनी प्रसिद्धि है, लोक-गीतकारो मे चदसखी का नाम भी उतना ही विख्यात है। उत्तर भारत के विशाल भू-भाग मे चदसखी की रचनाएँ जितनी जन-प्रिय है, उतनी शायद ही किसी लोक-कवि की हो। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पूर्वी राजस्थान और उत्तर-पश्चिमी मध्य प्रदेश के जन-साधारण मे, विशेष कर स्त्री-समुदाय मे, जो भजन और लोक-गीत गाये जाते है, उनकी अतिम पक्तियो मे प्राय "चद-सखी भज बालकृष्ण छवि" की शब्दावली होती है। इस प्रकार की रचनाएँ ब्रज, राजस्थानी, बुदेली, मालवी, निमाडी आदि हिंदी की अनेक बोलियो मे मिलती है, जो उनके बोलने वाले करोडो नर-नारियो की जिह्वा पर बसी हुई है।

ब्रजमडल और राजस्थान मे इस प्रकार के भजन और गीत इतने लोक-प्रिय है कि वहाँ प्रत्येक अवसर पर इनका गाया जाना अनिवार्य-सा हो गया है। वहा की स्त्रियाँ चक्की, चर्खा, झाडू-बुहारी आदि गृह-कार्यो को करती हुई इन गीतो को गुनगुनाया करती है, जिससे वे थकान के स्थान पर आनद-उल्लास का अनुभव करती रहती है। ब्रज की नारियाँ पनघट और यमुना के मार्ग पर जाती-आती हुई जब इन गीतो को मधुर ध्वनि से गाती है, तब भोर का स्वाभाविक सुदर वातावरण और भी सुखद और सुहावना ज्ञात होता है। दैनिक कार्यक्रम के अतिरिक्त त्यौहार, व्रत, उत्सव, पर्व तथा रात्रि-जागरण के अवसरो पर तो ये गीत आवश्यक रूप से गाये जाते है। सगीतज्ञो और गायको की मडलियो मे भी चदसखी की अनेक रचनाएँ परपरा से प्रचलित है। इन सब बातो से ज्ञात होता है कि उत्तर भारत के अधिकाश जन-जीवन के साथ चदसखी की रचनाएँ दूध-खाँड की तरह घुल-मिल गयी है।

राजस्थान मे मीराबाई और चदसखी की रचनाओ का घर-घर मे प्रचार है। राजस्थानी महिला-समाज मे तो चदसखी मीराबाई से भी अधिक लोकप्रिय

है। यह वहाँ के गण्यमान्य विद्वानो का ही मत है। * बुदेलखड, भदावर, मालव और निमाड की नारियो मे भी चदसखी की रचनाएँ खूब प्रचलित है।

ऐसे जन-प्रिय भजनो और गीतो की रचना करने पर भी चदसखी के जीवन-वृत्त की जानकारी अभी तक प्राय नही के बराबर है। हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रथो में उनका नामोल्लेख तो मिलता है, किंतु उनके जीवन-वृत्त के सबध मे उनसे कोई प्रामाणिक सूचना प्राप्त नही होती है। जीवन-वृत्त का तो क्या, उनके यथार्थ काल का भी अभी तक निर्णय नही हो सका है। उनके विषय मे यह भी निश्चय नही है कि वह स्त्री थी या पुरुष। उनकी रचनाओ के परपरागत गायको तक को यह पता नही है कि वह कोई महिला कवियित्री थी अथवा सखी नामधारी कोई पुरुष कवि, चदसखी उनका नाम है, अथवा उपनाम, उनकी रचनाओ मे उल्लिखित 'बाल कृष्ण' कौन थे, उनका किस सप्रदाय से सबध था और उनके गुरु तथा उपास्यदेव कौन थे, उन्होंने अपने लोकप्रिय भजनो और गीतो की रचना कब और कहा की थी, उनके नाम से जितनी रचनाएँ उपलब्ध है, उनमें से कितनी स्वय उनकी है और कितनी अन्य व्यक्तियो ने उनके नाम से रच डाली है। उनकी रचनाएँ जिन-जिन प्रदेशो मे प्रचलित है, उन-उन प्रदेशो के निवासी उनको उन्ही से सबधित मानते रहे है। ब्रज मे रहने वाले उनको ब्रजवासी और राजस्थान के निवासी उनको राजस्थानी समझते है। बुदेलखड और मालवा के लोगो का मत है कि वह उनके ही प्रान्तो के थे। वास्तविक बात क्या है, इसे प्रामाणिक सामग्री के साथ अभी तक उपस्थित नही किया गया है। चदसखी की लोक-प्रियता को देखते हुए उनके विषय मे इतनी अज्ञानता वास्तव मे आश्चर्य की बात मालूम होती है।

---

*१—मीरा के बाद चदसखी के भजनो का राजस्थान में सबसे अधिक प्रचार है, बल्कि औरतो में तो मीरा से भी इसके भजन अधिक प्रिय हैं।

—श्री अगरचद नाहटा (विक्रम, मार्गशीर्ष स० २००६)

२—राजस्थान में लोक-प्रियता के नाते चदसखी का नाम मीरा से भी ज्यादा है।

—श्री मनोहर शर्मा (राजस्थान-भारती, अप्रैल, १९५०)

३—राजस्थान की मरुभूमि में सगीतकार के रूप में जितनी लोकप्रिय चदसखी हुई है, उतनी मीरा भी नहीं।

—श्री कैलाशचन्द्र माथुर (साप्ताहिक हिन्दुस्तान, १२ जुलाई, १९५३)

चदसखी के सबध मे कई पत्र-पत्रिकाओ मे कितने ही लेख निकले है। उनकी रचनाओ के कई सकलन भी प्रकाशित हुए है। इन लेखो और पुस्तको मे चदसखी के काव्य-महत्व पर तो कुछ प्रकाश डाला गया है, किंतु उनके जीवन-वृत्त की कोई प्रामाणिक सामग्री उपस्थित नही की गयी है। इस विषय मे सभी विद्वानो ने अपनी असमर्थता स्पष्ट रूप से प्रकट की है *।

चदसखी सबधी इतने अज्ञान का कारण यह है कि उन्होने अपनी रचनाओ मे अपने विपय मे कुछ भी नही लिखा है, अत अत साक्ष्य के सहारे उनका जीवन-वृत्त उपस्थित नही किया जा सका है। उनके समकालीन या परवर्ती व्यक्तियो ने भी उनके सबध मे बहुत कम लिखा है। जो कुछ लिखा गया है, वह अधिकतर अप्रामाणिक है। जो प्रामाणिक है, वह अभी तक प्राय अप्रकट रहा है। अत वहि साक्ष्य भी उनके जीवन-वृत्तात के लिए उपयोगी सिद्ध नही हुआ है।

जहाँ तक अत साक्ष्य का सबध है, उनकी अधिकाश रचनाओ मे उल्लिखित 'चदसखी भज बाल कृष्ण छवि' का 'बाल कृष्ण' ही उनके जीवन वृत्तात की खोज मे कुछ सहायक हो सकता है। चदसखी के परम प्रिय यह 'बाल

---

*१—चदसखी के भजन जितने प्रिय है, उनकी जीवन-सबधी जानकारी उतनी ही तिमिरावृत्त है। अभी तक यह भी पता नहीं लग सका कि वे क्या थे कौन थे, कहा के थे और कब हुए ?

—श्री अगरचन्द नाहटा (विक्रम, मार्गशीर्ष, २००६)

२—चदसखी नाम युक्त भजनो का प्रणेता कहा का रहने वाला, कौन था, आदि बातें अज्ञात है।

—श्री मनोहर शर्मा (राजस्थान भारती, अप्रैल, १९५०)

३—चदसखी के जीवन-वृत्त के विषय में यत् किंचित ज्ञान-सचयन का कहीं कोई सूत्र उपलब्ध नहीं। ••• •• इनके जीवन पर कुछ भी कहना अद्यावधि प्राप्त सामग्री के आधार पर सभव नहीं।

—सुश्री पदमावती "शबनम" (चन्दसखी और उनका काव्य, वस्तुकथा, पृ० ३३)

४—चदसखी कौन थीं, कहा जन्मी आदि जानकारी अज्ञान के गर्भ मे है। खोज पर खोज चल रही है, परतु अभी तक कुछ भी हाथ नही लगा है।

—श्री कैलाशचद्र माथुर (साप्ताहिक हिन्दुस्तान, १२ जुलाई, '५३)

कृष्ण' कौन है और उनको इस नाम का इतना आग्रह क्यो है ? यदि इस प्रश्न का सतोषजनक उत्तर मिल जाय, तो चदसखी की जीवनी पर छाया हुआ अज्ञान का आवरण भी कुछ अशो मे दूर हो सकता है। कई विद्वानो ने 'बालकृष्ण' के सूत्र को पकड कर चदसखी के जीवन-वृत्तात की खोज करने की चेष्टा की है, किंतु उनके आनुमानिक कथन प्रमाण रूप मे स्वीकार नही किये गये हैं। मैंने विश्वसनीय सामग्री के आधार पर 'बालकृष्ण' की खोज कर चदसखी का प्रामाणिक जीवन-वृत्त देने की चेष्टा की है।

मेरी खोज से यह निश्चय होता है कि चदसखी स्त्री नही, पुरुष थे। वह विक्रम की अठारहवी शती के आरभ में विद्यमान थे। उनका जन्म और देहावसान सभवत ओडछा मे हुआ था, किंतु उनके जीवन का अधिकाश भाग वृन्दाबन मे बीता था। वह श्री हित हरिवश जी द्वारा प्रवर्तित राधाबल्लभ सप्रदाय के उत्साही और निष्ठावान सेवक थे। उनके गुरु बालकृष्ण स्वामी थे, जिनका नाम उनके नाम की छाप के साथ प्राय समस्त रचनाओ मे मिलता है। वह साप्रदायिक प्रचार के उद्देश्य से देश-भ्रमण किया करते थे। उनके साथ साधुओ की मडली रहती थी। वे लोग भजन-कीर्तन करते हुए भक्ति का प्रचार करते थे। उनके गाये हुए भजन और लोक-गीत जनता को इतने रुचिकर ज्ञात हुए कि उनका सर्व-साधारण मे व्यापक प्रचार ही नही हुआ, वरन् उनकी ताल और लय पर अनेक प्रक्षिप्त रचनाएँ भी गढ ली गयी। उनके प्रचार के क्षेत्र राजस्थान, बुदेलखड और मध्य भारत के विविध राज्य थे। वहाँ की जनता के साथ ही साथ राजा लोग भी उनकी भक्ति-भावना और रोचक रचनाओ की ओर आकर्षित हुए थे। यही कारण है कि इस विशाल भू-भाग मे उनकी रचनाओ का व्यापक प्रचार मिलता है।

चदसखी के नाम से प्रसिद्ध अधिकाश रचनाएँ भजन और लोक-गीत हैं। इनके अतिरिक्त उनके कुछ पद भी प्रसिद्ध है, जो कीर्तन-मडली, सगीत-समाज और मदिरो मे गाये जाते है। इन पदो की सख्या अभी तक बहुत कम थी, किंतु अब खोज मे वे भी यथेष्ट परिमाण मे उपलब्ध हो गये है। उन्होने किसी ग्रथ की रचना नही की थी। श्री किशोरी शरण 'अलि' ने उनकी एक पुस्तक 'ज्ञान चौवनी' का उल्लेख किया है, किंतु खोज करने पर उसका नाम 'ज्ञान चौगुणी' ज्ञात हुआ और वह चदसखी की प्रामाणिक कृति भी सिद्ध नही

हुई। इस प्रकार उनके काव्य का मूल्याकन उनकी स्फुट रचनाओ के आधार पर ही किया जा सकता है। इन रचनाओ मे वह भक्त कवि और लोक गीत-कार के दो रूपो मे प्रकट होते हैं।

भक्त कवि के रूप मे उनके रचे हुए पद ब्रज के अन्य पद-रचयिता भक्त कवियो की शैली के ही हैं। राधाबल्लभ सप्रदाय के अनुयायी होने के कारण उनके पदो मे उक्त सप्रदाय की भक्ति-भावना के अनुकूल कथन हुआ है। इस सप्रदाय मे प्रेमोपासना की प्रमुखता और प्रिया-प्रियतम द्वारा वृन्दावन में नित्य बिहार होने की मान्यता है। उसमे श्यामा-श्याम की युगल जोडी सदैव नव किशोर और क्षण मात्र के लिए भी एक-दूसरे से अलग न होने वाली मानी जाती है, अत ब्रज की बाल लीलादि तथा कृष्ण का मथुरा अथवा द्वारका-गमन इस सप्रदाय की भक्ति-भावना के अनुकूल नही है इसीलिए उनके पदो में वृन्दावन महिमा, बसत, होली, रास आदि लीलाए, युगल छबि और प्रेमासक्ति का ही सरस वर्णन हुआ है। उनमे ब्रज लीला और विरह-वियोग के जो कतिपय पद मिल गये है, वे राधावल्लभ सप्रदाय की मान्यता के विरुद्ध होने के कारण उनकी प्रामाणिक रचना नही माने जा सकते है।

लोक गीतकार और भजनकार के रूप मे उनके नाम से प्रचलित रचनाओ की सख्या बहुत अधिक है। वे ब्रज, राजस्थान, बुन्देलखड, भदावर, मालवा, निमाड आदि क विशाल भू-भाग की स्त्रियो द्वारा उन्हीं की बोलियो मे गायीं जाती हैं। उनमे प्रादेशिक वातावरण के अनुसार सयोग, वियोग, अनुराग, विराग, उपालभ, हास्य, पौराणिक कथा, अमर्यादित प्रेम और गार्हस्थिक जीवन के विविध प्रसगो का कथन हुआ है। उनकी भाषा सरल, भाव बोधगम्य और रचना-शैली काव्य-नियमो के बधनो से मुक्त है। उनमे नारी-हृदय के सहज भावो की सरस अभिव्यक्ति हुई है। इन गीतो और भजनो को गाकर विविध प्रदेशो की नारियाँ समान रूप से आनदित होती है।

इस प्रकार की रचनाओ मे ऐसे अनेक गीत और भजन है, जो थोडे हेर-फेर से कई प्रदेशो मे उन्हीं की बोलियो मे प्रचलित है। अनेक भजन कबीर, सूर, तुलसी और मीरा की रचनाओ को उलट-फेर कर बना दिये गये हैं। राजस्थान में मीरा की रचनाओ से मिलते हुए चदसखी के अनेक भजन प्रचलित है। उनमे मीरा की शब्दावली और भावो का भद्दा अनुकरण तो है, किन्तु

उनकी सी प्रेम-पीडा, मिलन की तीव्र उत्कठा और नारी-हृदय की कोमल किन्तु मार्मिक अभिव्यक्ति लेशमात्र भी नही है।

इन रचनाओ मे भाषा, भाव और शैली सबधी बडी विषमताएँ है। उनमे अच्छी से अच्छी और बुरी से बुरी सभी प्रकार की रचनाएँ मिलती है। इससे स्पष्ट है कि वे किसी एक व्यक्ति की रचनाएँ नही है, बल्कि अनेक व्यक्तियो ने अपनी-अपनी रुचि और प्रतिभा के अनुसार उनको कथ डाला है।* "कहत कबीर सुनो भाई साधो, तुलसीदास आस रघुबर की, मीरा के प्रभु गिरधर नागर" आदि शब्दावलियो के साथ जिस प्रकार कबीर, तुलसी और मीरा के अगणित प्रक्षिप्त पद बना दिये गये है, उसी प्रकार 'चदसखी भज बालकृष्ण छबि' की छाप से चदसखी के नाम से भी अनेक भजनो और गीतो की रचना कर डाली गयी है।† जिस प्रकार रत्नो के पारखियो के साथ ही साथ काँच के टुकडो के ग्राहक भी होते है, उसी प्रकार चदसखी की प्रामाणिक रचनाओ के साथ ही साथ ये प्रक्षिप्त

---

*१—चदसखी के गेय पदों की भाषा देश-भेद और काल-भेद से बदलती रही। .. जिस प्रात में पदो का प्रचार हुआ, वहाँ के लोक-समुदाय ने भाषा का चोला अपने रग में रँग दिया।

—चदसखी–पदावली (जीवनी और काव्य, पृ० ७)

२—चदसखी के भजनो में एक बात अधिक ध्यान देने योग्य है। इन भजनों को भिन्न-भिन्न स्थान के निवासी अपनी-अपनी बोली के साँचे में ढाल कर उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार से गाते है। इस प्रकार चदसखी के एक ही भजन के कई रूप भी पाये जाते है। साधारण हेर-फेर तो प्राय सभी पदो में मिल जायगा, परंतु कई भजनो में तो बहुत ही अतर पाया जाता है।

—राजस्थान–भारती (अप्रैल, १९५०)

†मीरा और कबीर की तरह उसके भजनो का भी मूल रूप प्राप्त नहीं होता। एक ही पद के अनेक रूप मिलते है। बडी उलझन की बात तो यह है कि 'चद्रसखी भज बाल कृष्ण छवि' राजस्थान निवासियो के हृदय पर इतना गहरा चढ़ गया है कि हर पद के पीछे चाहे वह किसी का क्यो न हो, वे यह पद जोड देते है, जिससे यह कहना भी कठिन हो जाता है कि वास्तव में यह पद किसका है।

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान (१२ जुलाई, १९५३)

रचनाएँ भी पसद की जाती रही है, किंतु उनमे वही भेद है, जो असली और नकली मे होता है। चदसखी की रचनाओ का सकलन करने वाले इस सत्य को स्वीकार करने के लिए विवश होते है।*

राजस्थान मे मीरा और चदसखी दोनो की ही रचनाओ का व्यापक प्रचार है, अत वहाँ पर इस प्रकार का प्रक्षेप और मिश्रण बहुत अधिक हुआ है। इस पुस्तक मे चदसखी और मीराबाई की समान रचनाओ का यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है। चदसखी के नाम से कुछ ऐसे भी भजन और लोकगीत प्रचलित है, जो सूरदास आदि भक्त कवियो की रचनाओ मे उलट-फेर कर बना दिये गये है। वे प्रक्षिप्त होते हुए भी काव्य की दृष्टि से बुरे नही है, किंतु लोक जीवन से सबधित अनेक साधारण और निकम्मी रचनाएँ भी उनके नाम से बनायी गयी है। कुछ रचनाएँ इतनी निरर्थक और कुरुचिपूर्ण है कि उन्हे पढते ही खीझ और घृणा होती है। ऐसी एक रचना देखिए—

सीतापति रो नाम म्हाने लागे प्यारो।
चुन-चुन कलियाँ सेज बिछाई पोढ़ण वेग पधारो।।
मनमोहन थारी सेज सँवारी पोढँण आवे बसी वारो।
'चद्रसखी' भज बालकृष्ण छबि सीता ने सेज सँवारो।।

इस भजन मे सीता द्वारा बिछायी हुई सेज पर वशी वाले मनमोहन के शयन करने का हास्यास्पद उल्लेख है। एक अन्य रचना मे भाँग की प्रशसा की गयी है —

कदम तले घोट पिलाई रे कान्हा अँखिया में लाली छाई।
विजयापुर से भाग मँगाई राधा जी के हाथ धुवाई।।
आप कृष्ण जी घोटण लागा राधा प्यारी आन छणाई।
और सख्या ने थोडी-थोड़ी पाई राधे जी ने खूब छकाई।।
'चद्रसखी' भज बालकृष्ण छबि हरि हँसि कठ लगाई।।

---

* सभी पहलुओ पर विचार करने पर प्राप्त पदो में प्रामाणिक पदो की सख्या बहुत छोटी ही प्रतीत होती है।

—चदसखी और उनका काव्य (वस्तुकथा, पृ० ५१)

इस प्रकार की कुछ निस्सार और निरर्थक तुकबदियो के मिलने से चदसखी का महत्व कम नही होता है। उनके नाम से प्राप्त अनेक रचनाए सुदर है और उनका लोक-मानस पर गहरा प्रभाव पडा है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रामाणिक रचनाओ का सकलन किया जावे और भद्दी तुकबदियो को छोड दिया जावे। किंतु यह कार्य स्वय अपने मे बहुत बडा और कठिन है। कारण यह है कि चदसखी का लोक-काव्य कई राज्यो के विशाल भू-भाग मे फैला हुआ है, जो लाखो नर-नारियो द्वारा अनेक वर्षो से गाया जाता रहा है। उनके गीतो के लिपिबद्ध प्राचीन सग्रह भी उपलब्ध नही है, अत उनकी प्रामाणिकता का निश्चय करना बडा कठिन है। फिर भी इस पुस्तक मे भद्दी, निरर्थक और हास्यास्पद रचनाएँ न आने देने की पूर्ण चेष्टा की गयी है। जहाँ तक प्रक्षिप्त रचनाओ का सबध है, उनके विषय मे इस प्रकार की सावधानी की आवश्यकता नही समझी गयी। एक बार उनकी सभी रचनाओ का सकलन होना आवश्यक है, फिर उनकी प्रामाणिकता की परीक्षा होने मे सुविधा रहेगी।

चदसखी की दोनो प्रकार की अर्थात् पद-साहित्य और लोक-काव्य की रचनाओ मे ही इतना अतर है कि उन्हे सहसा एक ही कवि की रचना मानने मे सकोच होता है। चदसखी के जीवन-वृत्तात की खोज से यह निश्चित हो गया है कि वे मूल-रूप मे भक्त कवि और राधाबल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे। उनका पद साहित्य अभी तक अत्यल्प परिमाण मे उपलब्ध था, किंतु अब वह भी प्रचुर परिमाण मे प्राप्त हो गया है। उनकी दोनो प्रकार की रचनाओ की समीक्षा करने पर निम्नलिखित तथ्य सामने आते है—

(१) भक्ति-काव्य के पद जितने प्राचीन कीर्तन-सग्रहो मे मिलते है, लोक-काव्य की रचनाओ का उतना पुराना सकलन कही से उपलब्ध नही हुआ है।

(२) पद-साहित्य की भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है, जब कि लोक-काव्य की भाषा ब्रज, राजस्थानी, बुदेली, मालवी, निमाडी, पजाबी सभी प्रकार की है।

(३) पद-साहित्य मे 'चदसखी हित बालकृष्ण प्रभु', 'चदसखी' या केवल 'चद' की छाप मिलती है, जब कि लोक-काव्य मे प्राय 'चदसखी भज बालकृष्ण छबि' ही लगा मिलता है।

(४) पद-साहित्य प्राय राधाबल्लभ सम्प्रदाय की भक्ति-भावना के अनुकूल है, जबकि लोक-काव्य के विषय मे यह बात नही है। उनके नाम से प्रसिद्ध अनेक रचनाएँ तो राधाबल्लभ सम्प्रदाय की मान्यता के सर्वथा विरुद्ध दिखायी देती है।

इन तथ्यो से यही समझा जा सकता है कि चदसखी नाम के दो कवि हुए होगे। एक ने पद-साहित्य की और दूसरे ने लोक-काव्य की रचना की होगी। 'मिश्रबधु विनोद' मे इसी प्रकार के दो कवियो का उल्लेख भी हुआ है। उनमे से एक को ब्रजवासी, स० १६३८ में विद्यमान और राधाबल्लभ सम्प्रदाय का अनुयायी बतलाया गया है। दूसरे को जयपुर निवासी, स० १७०० के लगभग विद्यमान लिखा गया है। राजस्थानी विद्वानो के मतानुसार दूसरी चदसखी राजस्थान की और मालवी लेखको के मतानुसार वे मालवा की महिला कवियित्री थी। यदि एक के स्थान पर दो चदसखी मानते है तब लोक-काव्य के 'बालकृष्ण' का कोई स्पष्टीकरण नही दिया जा सकता है। राधाबल्लभ सम्प्रदाय के बालकृष्ण स्वामी का शिष्य होने के कारण उनकी पद रचनाओ मे 'चदसखी हित बाल-कृष्ण प्रभु' की सार्थकता स्पष्ट है।

चदसखी की समस्त उपलब्ध रचनाओ का अध्ययन करने के उपरात मेरा मत है कि चदसखी नामक एक ही भक्त कवि हुए है। उनके पद-साहित्य की अधिकाश रचना प्रामाणिक है, किंतु उनके नाम से प्रचलित लोक-काव्य की अनेक रचनाएँ अप्रामाणिक है, जो विभिन्न स्थानो के नर-नारियो ने समय-समय पर रच ली है। उनके कुछ लोक-गीत और भजन भी प्रामाणिक है, जो उन्होने प्रचारार्थ रचे थे। चदसखी के जीवन वृत्तात से प्रकट है कि राधाबल्लभ सम्प्रदाय की दीक्षा लेने के अनतर उन्होने साधुओ की जमात के साथ देश-भ्रमण किया था। उस समय वह राजस्थान, बुदेलखड, मालवा आदि जहाँ भी गये, वहाँ उनके लोक-गीत प्रचलित हो गये। वे गीत इतने लोक-प्रिय हुए कि उनकी ताल और लय पर अनेक व्यक्तियो ने चदसखी के नाम से अनेक गीत रच डाले।

पहले लिखा जा चुका है कि चदसखी के जीवन-वृत्तात से कुछ भी परिचय न रखते हुए भी ब्रज, राजस्थान आदि के लाखो व्यक्ति अनेक वर्षो से उनकी रचनाओ से परिचित रहे है। महिलाओ, लोक-गायको और गवैयो मे उनकी रचनाओ का काफी समय से प्रचार रहा है। विद्वद्वर श्री अगरचद जी नाहटा

न लिखा है कि स० १७६६ के आस-पास चदसखी के एक लोक-गीत "ब्रज मडल देस दिखाय, रसिया" का राजस्थान मे विशेष प्रचार था। उस गीत की लय और चाल इतनी लोक-प्रिय हुई कि उस समय के जैन कवि न्याय सागर ने स्वरचित "वासुपूज्य स्तवन" के गायन के लिए उसे अपनाया था।

चदसखी की रचनाओ को मुद्रित रूप मे प्रकाशित करने का सर्वप्रथम प्रयास श्री कृष्णानद जी व्यास ने किया था। उन्होने अब से प्राय १२५ वर्ष पूर्व अनेक गायको और सगीत-शास्त्रियो की सहायता से विविध राग-रागिनियो के हजारो गान एकत्र किये थे, जिन्हे उन्होने अपने विशाल ग्रथ 'राग कल्पद्रुम' मे प्रकाशित किया था। उसमे चदसखी के १८ गानो का सकलन हुआ है। इसके पश्चात् सगीत और भजनो की कई पुस्तको मे उनकी कतिपय रचनाओ को प्रकाशित किया गया। राग रत्नाकर, भक्त चितामणि मे उनके ११ भजनो का सकलन किया गया था। श्री रघुनाथ प्रसाद सिंहानिया ने स० १९९० मे 'राजस्थान रिसर्च सोसाइटी' कलकत्ता द्वारा 'मारवाडी भजन सागर' नामक एक भजनसग्रह प्रकाशित किया, जिसमे चदसखी के ५४ भजन सगृहीत है। ब्रज मे 'एकादशी जागरण' तथा 'भजन-सग्रह' नामक पुस्तको मे भी उनके कुछ भजन और गीत प्रकाशित किये गये। इन पुस्तको मे चदसखी की रचनाएँ अन्य कवियो की रचनाओ के साथ प्रकाशित हुई है।

जहाँ तक चदसखी की रचनाओ को पृथक् रूप से प्रकाशित कराने का सबध है, उसका सर्वप्रथम श्रेय राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री नरोत्तमदास स्वामी को है। उनके सगृहीत ५४ भजनो का एक सकलन, 'चदसखी रा भजन' नाम से ठाकुर रामसिंह जी द्वारा सपादित होकर नवयुग ग्रथ कुटीर, बीकानेर, द्वारा प्रकाशित किया गया। इससे पूर्व 'मारवाडी भजन सागर' मे चदसखी के जो ५४ भजन प्रकाशित हुए थे, उनमे से १३ कुछ पाठातर के साथ इस सग्रह मे भी है, शेष ४१ भजन दोनो मे भिन्न प्रकार के है। राजस्थान के एक अन्य विद्वान श्री महावीर सिंह गहलोत ने चदसखी की ८४ रचनाओ का सकलन 'चदसखी पदावली' के नाम से किया, जो स० २००४ के लगभग 'ग्रथागार, काशी' से प्रकाशित हुआ था। सुश्री पद्मावती 'शबनम' ने स० २०११ में 'चदसखी और उनका काव्य' नामक पुस्तक की रचना की। इसमें ११४ भजनो का सकलनहुआ है। इन सब पुस्तको मे चदसखी की वे रचनाएँ है, जो अधिकतर

राजस्थान में प्रचलित है। ब्रज, बुन्देलखड, मालवा आदि क्षेत्रो की रचनाओ का सकलन कर उन्हे प्रकाशित कराने की अभी तक कोई चेष्टा नही हुई है। जहाँ तक उनके पद-साहित्य का सबध है, वह तो अभी तक उपलब्ध ही नहीं था, अत उसके प्रकाशन का प्रश्न ही उपस्थित नही हुआ।

मेरी बहुत दिनो से इच्छा थी कि चदसखी की समस्त रचनाओ का एक सर्वांगपूर्ण सकलन किया जाय। ब्रज के भक्ति-साहित्य के शोध में चदसखी के अनेक पद और भजन प्राप्त हुए थे। उनको समय-समय पर सकलित करता रहा। ब्रज साहित्य मडल के सग्रहालय मे चदसखी के पदो की एक पोथी भी देखी। इस सामग्री के आधार पर ब्रज की रचनाओ का सकलन तो प्रस्तुत हो गया, किंतु राजस्थानी, मालवी आदि की रचनाओ के लिए उक्त भाषाओ के अधिकारी विद्वानो का सहयोग आवश्यक था। मुझे हर्ष है कि इस सबध में मैंने जिन सज्जनो को लिखा, उन्होने प्रसन्नतापूर्वक सहायता देने की कृपा की।

प्रस्तुत पुस्तक उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा नियुक्त लोक-साहित्य समिति द्वारा प्रकाशित की गयी है, अत इसमें चदसखी के भजन और लोक-गीत ही सकलित किये गये हैं। इस कवि के पद, जो ब्रज के भक्ति-साहित्य में अपना पृथक् महत्व रखते है, इसमे स्थान नही पा सके है। इस पुस्तक में सकलित भजन और लोक-गीत ब्रज, राजस्थानी, मालवी, निमाडी एव पजाबी बोलियो के हैं, जिनको उक्त बोलियो के क्रम से ही रखा गया है। फिर भी कुछ भजन और लोक-गीत उक्त बोलियो के सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रचलित होने के कारण मिश्रित बोलियो के भी है। उदाहरणार्थ ब्रज के कुछ भजन और लोक-गीत राजस्थानी मिश्रित हैं तथा राजस्थानी के ब्रज मिश्रित है। विंध्य प्रदेश में प्रचलित भजनो और लोक-गीतो को ब्रज के अन्तर्गत रखा गया है।

इस पुस्तक के सकलन मे मुझे सबसे अधिक सहयोग राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री अगरचद जी नाहटा से प्राप्त हुआ है। उन्होने विविध साधनों से पुस्तक की सामग्री जुटाने में सहायता की। उन्ही की कृपा से यह कठिन काम इतनी शीघ्रता से पूरा हो सका है। मै नाहटा जी का अत्यत अनुगृहीत हूँ। श्री नरोत्तम-दास जी स्वामी ने अपने सकलन को मेरे पास भेज दिया। उसमें राजस्थानी के बहुत से नये भजन और गीत मिले। इनके कारण राजस्थानी सकलन को पूरा किया जा सका है। मैं श्री स्वामी की उदारता का आभारी हूँ। मालवी

संकलन डा० चिंतामणि उपाध्याय और श्री श्यामजी परमार की कृपा से पूरा हुआ है। ब्रज के ११ गीत श्री मोहनस्वरूप भाटिया द्वारा प्राप्त हुए हैं। इन सब सज्जनो का भी मैं आभारी हूँ। अंत में मैं लोक-साहित्य समिति के अध्यक्ष श्री श्रीनारायण जी चतुर्वेदी और उसके सचिव श्री विद्यानिवास जी मिश्र का अनुगृहीत हू, जिनके कारण यह पुस्तक इस रूप में प्रस्तुत हो सकी है।

—प्रभुदयाल मीतल

चंदसखी

संक्षिप्त जीवनी

चदसखी की रचनाओ का व्यापक प्रचार होने पर भी उनके जीवन-वृत्तात की बिलकुल जानकारी नही है। उनकी रचनाओ के दो-एक छोटे सकलन प्रकाशित हुए है, किंतु उनमे भी उनके जीवन के सबध में कुछ नही लिखा गया है। मैंने जो अनुसधान किया है, उसके फलस्वरूप चदसखी के जीवन-वृत्तात की रूपरेखा इस प्रकार बनती है—

चदसखी का जन्म स० १७०० से कुछ पूर्व सभवत ओडछा में हुआ था। उनका मूल नाम चद या चदलाल था, किंतु साम्प्रदायिक भावना के अनुसार वह अपने को चदसखी कहते थे। बाद मे वह इसी नाम से प्रसिद्ध हो गये। उनकी रचनाओ मे 'चद', 'चदसखी' दोनो नाम मिलते है। वह अपने आरभिक जीवन में ओडछा के निकटवर्ती मोठ थाना के थानेदार थे। पूर्व सस्कारवश उनके हृदय में भक्ति का अकुर विद्यमान था, जो समय आने पर पल्लवित-पुष्पित होकर एक विशाल वृक्ष के रूप में परिणत हो गया।

अपने जन्म-स्थान, पद-गौरव और घर वालो का मोह त्याग कर वे वृन्दाबन चले गये। वहा पर राधावल्लभीय सप्रदाय के एक विख्यात सत श्री बालकृष्ण स्वामी से दीक्षा लेकर वृन्दाबन वास करने लगे। उसी समय उन्होने भक्ति-सबधी पदो की रचना करना भी आरभ किया।

उन दिनो राधावल्लभीय सप्रदाय के प्रचारार्थ अनेक उत्साही भक्त-जन देशाटन किया करते थे। बालकृष्ण स्वामी के आदेशानुसार चदसखी भक्तो की मडली सहित देशाटन के लिए चल दिये। वे राजस्थान, बुदेलखड, मालवा आदि विविध राज्यो में गये और वहाँ की जनता को उन्होने भक्ति का उपदेश दिया। उस यात्रा मे अपने मत के प्रचार के लिए उन्होने अनेक भजन और लोकगीतो की भी रचना की, जो उक्त राज्यो में प्रचलित हो गये। वहा के निवासी उन रचनाओ को बडी रुचि के साथ गाते थे। वे रचनाएँ इतनी लोकप्रिय हुईं कि उनकी चाल और लय पर और भी अनेक भजन और लोक-गीत रचे

गये। उन्होंने कदाचित राजस्थान मे विशेष प्रचार किया था, क्योकि उनकी रचनाएँ वहाँ पर विशेष रूप से उपलब्ध होती हैं।

देशाटन से वापस आकर वह वृन्दाबन में निवास करने लगे। वह वहाँ के केशीघाट पर रहते थे। वहाँ पर उन्होने एक विशाल कुज बनवाया, जो 'चदसखी की कुज' के नाम से प्रसिद्ध है। अपनी प्रौढावस्था में वह ओडछा में जाकर रहने लगे थे। वहाँ के राजा उदोतसिंह ने उनकी बडी सेवा-शुश्रूषा की थी। अत में ओडछा में ही उनका देहात हुआ। उनके देहात की तिथि आषाढ़ कृष्ण ११ है और सवत् सभवत १७५८ है। उन्होने अनेक पद और भजन बनाये थे, जो प्रचुर सख्या मे उपलब्ध है।

पं सखां

के

भजन और लोक-गीत

ब्रजभाषा

१—विनय

सरस्वती-वदना

[१]

मेरे हिरदे मे आन विराज, सरस्वती तुम माता ।।

चातुर तेरौ ध्यान धरत है, हिरदे में कर मान ।
भूली विद्या हमें बतइयो, दै बुद्धी और ज्ञान ।।
बुद्धि की तुम दाता ।। मेरे हिरदे० ।।

कच्चे दूध न्हवाऊँ मैया, करूँ मैं आरती,
माँग सिंदूर, भोग कू मेवा, मुखडे में नागर पान ।।
बुद्धि की तुम दाता ।। मेरे हिरदे० ।।

हस सवारी, बीन बजावै, कर सोलह सिंगार ।
स्वेत वरन, आभूषन सोहैं, गल मोतिन कौ हार ।।
बुद्धि की तुम दाता ।। मेरे हिरदे० ।।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि चरनन चित लाय ।
वो मोहन अलगोजा वारौ, लायौ सग लिवाय ।।
बुद्धि की तुम दाता ।। मेरे हिरदे० ।।

[२]

मगल आरति नद कुँवर की ।
जसुमति-सुत श्री राधा-वर की ।।
मगल जनम-करम-कुल मगल, मगल जसुमति-माखनचोर ।
मगल मोरमुकुट-कुडल छवि, मगल मुरलि बजै घनघोर ।।
मगल ब्रजवासी सब मगल, मगल गान करें चहुँ ओर ।
मगल गोपि, ग्वाल सब मगल, मगल राधा-नदकिसोर ।।
मगल नद, जसोदा मगल, मगल सुतहिं खिलावै गोद ।
मगल गिरि गोवर्धन मगल, मगल वृन्दाबन नदकिसोर ।।
मगल कुजबासी सब मगल, मगल सोभा है चहुँ ओर ।
मगल स्याम, जमुन-जल मगल, मगल धार बहै अघ-होर ।।
मगल श्री हलधर सब मगल, मगल राधा जुगल किसोर ।
मगल ये मूरत मन मोहै, 'चदसखी' की लगी चरनन डोर ।।

[३]

मगल आरति कीजै भोर ।
मगल मथुरा, मगल गोकुल, मगल राधा नदकिसोर ।।
मगल लकुट-मुकट-बनमाला, मगल मुरली है घनघोर ।
मगल नदगाँव-बरसानौ, मगल गोवर्धन गिरि मोर ।।
मगल बसीवट तट जमुना, मगल लता झुकी चहुँ ओर ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, मगल ब्रजवासी की ओर ।।

इष्ट-भजन

[४]

भजो सुदर स्याम मुकटधारी ।
बदन कमल पर कुडल झलकै, अलकै सोहै घूँघरवारी ।।
उर वैजती माल विराजै, बनमाला राजै गुजन वारी ।
केसर भाल, तिलक सिर सोहै, मुरली की छवि है न्यारी ।
पाँयन में पैजनियाँ सोहै, गद-गद आवत गिरधारी ।

बंसीवट तट रास रच्यौ है, सँग लिये राधा प्यारी ॥
वृन्दाबन में खेलत डोलत, बिहार करत है बनवारी ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन-कमल की बलिहारी ॥

स्तुति

[५]

जय-जय जसोदा-नंदन की, जग-वंदन की ॥
भाल विसाल माल मोतियन की, खौर विराजै चंदन की ।
पैठि पताल कालिनाग नाथ्यो, फन पर निरत करदन की ॥
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै, हाथ लकुटिया चंदन की ।
इंद्र ने कोप कियौ ब्रज ऊपर, नख पर गिरवर धारन की ॥
केसी मारे, कंस पछारे, असुरन के दल भंजन की ।
उग्रसेन को राज तिलक दियौ, रक्षा करी सब संतन की ॥
घंटा-ताल-पखावज बाजै, गहरी धुनि सब संतन की ।
आप तो जाय द्वारका छाये, पल-पल लहर तरंगन की ॥
आस-पास रत्नाकर सागर, सोभा करत किलोलन की ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन कमल रज वंदन की ॥

[६]

मदनमोहन मेरी विनती सुनो ।
करुनासिंधु जगत बंधु, संतन हितकारी ।
मोर मुकट पीतांबर सोहै, कुंडल की छवि न्यारी ।
जमुना के नीरे-तीरे धेनु चरावे, ओढै कामरि कारी ॥
वृंदाबन की कुंज गलिन मे, निरत करै गिरधारी ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन कमल बलिहारी ॥

[७]

साँवरो जग तारन को आयौ ।
निसि-दिन तेरौ ध्यान धरत है, सुर-नर पार न पायौ ।
भान-सुता मे कूद पडे हरि, विषधर जाय जगायौ ॥
फन पै नाँच पताल पठायौ, तीन लोक जस गायौ ।
भारत में प्रन पूरौ कीयौ, अर्जुन-रथ पर आयौ ॥

गीता-ज्ञान दया कर दियौ, रूप विराट दिखायौ ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, विमल-विमल जस गायौ ।।

[८]

बलिहारी लाल ! तेरे आवन की, मन-भावन की ।
इत मथुरा उत-गोकुल नगरी, बीच मे रास-रचावन की ।।
चुनि-चुनि कलियाँ मैं हार बनाऊँ, यदुवर-उर पहरावन की ।
मोर मुकट पीतांबर सोहै, मधुर-मधुर मुसकावन की ।।
जमुना के तीरे-तीरे धेन चरावै, मधुरी सी बीन बजावन की ।
पैठि पताल कालिया नाथ्यौ, फन पर निरत करावन की ।।
इंदर कोपि चढ्यौ ब्रज ऊपर, नख पर गिरवर धारन की ।
केस पकरि हरि कंस पछार्‌यौ, जमुना-धार बहावन की ।।
उग्रसेन को राज तिलक दियौ, उनहूँ के बस बढ़ावन की ।
बृन्दावन में रास रच्यौ है, सहस गोपि इक कान्हन की ।।
जल बूडत गजराज उबार्‌यौ, साग बिदुर-घर पावन की ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन चित लावन की ।।

[९]

बन आये आप बनवारी,
सिर धरि चंदन खौरि, मोतियन की गल-माला डारी ।
मोर-मुकट पीतांबर सोहै, कुंडल की छवि न्यारी ।।
वृन्दाबन की कुंज गलिन में, चाल चलत अति प्यारी ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन कमल पर बलिहारी ।।

रामचन्द्रजी की स्तुति

[१०]

करुनानिधान, सुनिये कछू करुना कान मेरो ।
अब मेरी बेर राघो ! तुम सोवो हो, या जागो ।

तुम कितेक पतितन तारे। कई गिनत-गिनत कवि हारे।
महाराज अवध-बिहारी। तुम पर 'चदसखी' बलिहारी।*

[११]

तेरे बाँके मुकट की छवि न्यारी, सोभा भारी।
जमुना के नीरे-तीरे धेनु चरावै, काँधे कमरिया है कारी॥
बृन्दावन में रास रच्यो है, सहस गोपि, इक गिरधारी।
पीतांबर की कछनी काछे, मुरली बजावै बनवारी॥
बृन्दावन की कुज गलिन में, विहरत हैं प्रीतम-प्यारी।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन-कमल बलिहारी॥

[१२]

मुकट पर वारी जाऊँ, नागर-नदा।
सब देवन में कृष्ण बडे हैं, ज्यो तारन मे चदा॥
सब सखियन में राधा बडी है, ज्यो नदियन में गगा।
सब भगतन में भरत बडे हैं, जोधन में हनुमता॥
पैठ पताल कालिनाग नाथ्यो, फन-फन निरत करदा।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, काटो जम के फदा॥†

---

*चदसखी की सांप्रदायिक मान्यता के अनुसार उनके द्वारा रामचन्द्र जी की स्तुति होना असगत है, अतः यह किसी अन्य की रचना जान पड़ती है।

† इस भजन का बडा व्यापक प्रचार है। स्थान भेद से इसके कई रूप मिलते हैं। राजस्थान और मालवा में भी यह भजन कुछ शब्दो के हेर-फेर के साथ प्रचलित है। इसी से मिलता हुआ एक भजन मीराबाई के नाम का भी प्रसिद्ध है यथा—

राजथास्नी रूप

मुकट पर वारी जाऊँ नागर नदा।
सब देवन में महादेव बडे है, तीरथ में बडी गगा॥
दरसण में रणछोड बडे है, तारन में बड़े चदा।
सब भगतन में भरत बडे है, जोधन में हणमता॥

[१३]

चार बरन मे सोइ बडा, जिन राधा-कृष्ण रटा ।।
काहे को जोडत माल-खजाना, काहे को छावत ऊँचौ अटा ।
जब जम की तलबी आवेगी, छोड जाय सब लटा-पटा ।।
यह दम हीरा-लाल अमोलक, पल-पल में जाय घटा-घटा ।
वहाँ से आया कौल-करार कर, यहाँ फिरत तू नटा-नटा ।।
अपने कुटुम को ऐसे देखे, पलक उठाए पटा-पटा ।
जब तेरा हसा चला जात है, छोड जाय तू राज-पटा ।।
यह ससार मतलब का गरजी, बातें करता झूट-मठा ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, कानन कुडल मुकट जटा ।।

सब सखियन में राधे बडी है, गोपन में गोविंदा ।
पैस पताल कालीनाग नाथ्याँ, फण-फण निरत करदा ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तुम ठाकुर हम बंदा ।।

—चदसखी का भजन, स० ६

मालवी रूप

मुकट पर वारी जाऊँ, ओ नागर नद ।।
सब पाडन में हिमाचल बडो है, सब तीरथ में गग ।
सब देवन में सूरज बडो है, सब तारन में चद ।। मुकट पर० ।
सब सखियन में राधा बड़ी है, सब गुवालन में गुविंद ।
'चदसखी' भज बाल की शोभा, हरि की सेवा में बडो अनद ।। मुकट पर० ।।

—डा० चितामणि उपाध्याय द्वारा सकलित

मीराबाई का भजन

मुकट पर वारी जाऊँ, नागर नदा ।
बनस्पति में तुलसी बड़ी है, नदियन में बडी गगा ।
सब देवन में शिव जी बड़े है, तारन में बडा चदा ।।
सब भक्तन में भरथरी बड़े है, शरण राखो गोविंदा ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित फदा ।। ३२० ।।

—मीराँ-माधुरी, पृ० ८१

[१४]

करनी करि लै, हरि-गुन गा लै, एक दिन धोखे मे लुटि जाय ।।
यह ससार रैन का सुपना, यहाँ नही कोई है अपना ।
बदे तेरी झूठी कल्पना, अगिन माँहि जरि जाय ।। करनी० ।।
माया मे लिपट्यौ तू बदा, अब तो चेत आँख के अधा ।
आवेगा जब जम कौ फदा, हाथ पसारे जाय ।। करनी० ।।
जिस मालिक ने पैदा कीया, उसका नाम कभी ना लीया ।
भूखे को भोजन नही दीया, अत समय पछिताय ।। करनी० ।।
तू जाने ये घर के मेरे, सिगरे बैरी बन जायँ तेरे ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि-चरनन चित लाय ।। करनी० ।।

२—माहात्म्य

ब्रज-वृन्दावन का आकर्षण

[१५]

विरज की रज हम क्यो न भईं बीर !
पडी रहत गोकल की डगर मे, उड-उड लागत स्याम-सरीर ।।
सुर-नर-मुनि-ब्रह्मादिक दुर्लभ, स्रवन सुनत बसीवट-तीर ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, मिलि गए मोहन, मिटि गई पीर ।।

[१६]

लागै वृन्दावन नीकौ आली, मोय लागै वृन्दावन नीकौ ।
घर-घर ठाकुर-सेवा विराजै, दरसन गोविंदजू कौ ।।
रतन-सिंघासन ठाकुर विराजै, मुकट धरै तुलसी कौ ।। आली० ।।*

---

*यह भजन सर्व प्रथम 'राग कल्पद्रुम', भाग १, पृष्ठ ५६४ पर छपा था। वहाँ से 'चदसखी' के सकलन की कई प्रतियो मे उद्धृत किया गया था। उनमें इसका पाठ अशुद्ध था, जिसे यहाँ पर शुद्ध कर छापा गया है। मीरा का मूल भजन इस प्रकार है—

आली, म्हाँने लागे बृन्दावन नीको ।
घर-घर तुलसी ठाकुर-पूजा, दरसण गोविंद जी को ।।
निरमल नीर बहत जमना में, भोजन दूध-दही को ।
रतन-सिंघासन आप विराजै, मुकट धर्‍यो तुलसी को ।।
कुजन-कुजन फिरत राधिका, सबद सुणत मुरली को ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, भजन बिना नर फीको ।। ३ ।।

—मीराँ-माधुरी, पृ० २ ।

पूर्वोक्त भजन के कई पाठ मिलते है। मूल रूप में यह भजन मीरा का जान पड़ता है, जिसे थोड़े परिवर्तन से चदसखी के नाम से प्रसिद्ध किया गया है।

बसीवट जमुना-तट सुदर, सब ब्रज को है टीको।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, सब जग लागत फीको ।। आली० ।।

इसका दूसरा पाठ इस प्रकार है—
नीको ल ै वृन्दावन, हमें तो बडौ नीको लगै।
घर-घर में है तुलसी के बिरवा, दरसन गोविंद जी को ।। हमें तो बडौ नीको लगै ।।
नीकौ लगै वृन्दाबन, हमें तो बडौ नीकौ लगै ।।
निरमल नीर बहत जमुना कौ, भोजन दूध-दही कौ।
रतन-सिघासन आप विराजें, मुकट धर्यौ तुलसी कौ ।। हमें तो बडौ नीकौ लगै ।।
नीकौ लगै वृन्दाबन, हमें तो बडौ नीकौ लगै ।।
कुंजन-कुजन फिरत राधिका शब्द सुनत मुरली कौ।
चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, भजन बिना नर फीकौ ।। हमें तो बड़ौ नीकौ लगै ।।
नीकौ लगै वृन्दाबन, हमें तो बडौ नीकौ लगै ।।

३—लीला

श्रीकृष्ण की बाल-लीला

[१७]

अनोखौ जायौ ललना, मैं वेदन मे सुनि आई।
मथुरा मे जानै जनम लियौ है, गोकुल मे झूलै पलना।। मैं वेदन०।।
लै बसुदेव चले गोकुल कूँ, मारग दै गई जमुना।
कर सिंगार पूतना चाली, पलना ते लै लियौ ललना।। मैं वेदन०।।
रतन जडित कौ बन्यौ पालनौ, रेसम के लागे फूँदना।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, या कौ घर-घर खेलै ललना।। मैं वेदन०।

[१८]

झुलइयो मैया, स्याम सुंदर पालना।
काहे कौ तेरो बन्यौ है पालनौ, काहे के लागे फूँदना।
सोने कौ मेरौ बन्यौ है पालनौ, रेसम के लागे फूँदना।। झुलइयो०।।
जो लाला को पलना झुलावै, ताय देऊँ कगना।
काहू गुजरिया की नजर लगी है, रोय उठे ललना।। झुलइयो०।।
राई-नोन उतारै जसोदा, किलक उठे ललना।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चिरजीवो ये ललना।। झुलइयो ०।।

[१९]

कन्हैया झूलै झूलना, नैक हौलै झोटा दीजो।
मथुरा में जानें जनम लियौ है, गोकुल में झूलै झूलना।। नैक हौले०।।
काहे कौ तेरौ बन्यौ है हिंडोला, काहे के लागे फूँदना।। नैक हौले०।।
रतन जडित कौ बन्यौ हिंडोला, रेसम के लागे फूँदना।। नैक हौले०।।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, जाय सखी झुलावें झूलना।। नैक हौले०।।

[२०]

कौन सी ने डार दियौ री टौना।।
मैं जमुना जल भरन जात री, मैंने सोमत छोडौ है ललना।

मैं जमुना जल भरि कै लाई, मैंने रोमत पायौ है ललना ।।
राई-नौन उतारि जसोदा, कुरता-टोपी से लगाय लाई रोग्रना ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, जुग-जुग जीग्रौ मेरौ स्याम सलोना ।।

[२१]

जुलम करि डार्यौ री, या कारी कामर वारे ने । जुलम० ।।
मथुरा मे हरि जनम लियौ है, गोकुल मे बजे नगारे री ।
सब सोए जाके पहरे वारे, याके आप ही खुलि गए तारे री ।। जुलम० ।।
करि सिंगार पूतना आई, याके छिन मे प्रान निकारे री ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, ये जीवन-प्रान हमारे री ।। जुलम० ।।

[२२]

बाल-क्रीडा

जसोदा लेति लला को कनियाँ ।
अपने लला को जामा सिलाऊँ, आठ कली नौ तनियाँ ।।
अपने लला को गहनौं गढाऊँ, छल्ला-छीप अगुलियाँ ।
कानन को कुडल बनवाऊँ, बाहन बीच भुजनियाँ ।।
अपने लला को काजर लगाऊँ, काजरु और ढिटनियाँ ।
मोरपख कौ मुकट विराजै, माथे पै खौर चदनियाँ ।।
अपने लला कौ व्याह रचाऊँ, सुदर-सुदर ग्वालनियाँ ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, राधा सी दुलहिनियाँ ।।

[२३]

नाँचै नदलाल, नचावै वाकी मैया ।
रुझक-झुमक पाँय नेवर बाजै, ठुमक-ठुमक पाँय धरत कन्हैया ।।
दूध न पीवै कान्हा, दहीय न खावै, माखन-मिसरी कौ बडौ री खवैया ।
पाट-पटबर कान्हा ओढ न जानै, कारी कमरिया कौ बडौ री ओढैया ।।
बृदावन मे रास रच्यौ है, सहस गोपिन मे नाँचै एक कन्हैया ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन कमल की मै लेऊ री बलैया ।।

[२४]

बाजै-बाजै रे लाल ! तेरी पैंजनियाँ, हो रुनझुनियाँ ।
पैजनियाँ जे अधिक सुहावें, मोहि लिये सुर-नर-मुनियाँ ।। बाजै०।।
नीले से अग पै पीत झगुलिया, रत्न जडाव की पैजनियाँ ।
चदन चर्चित अग मनोहर, सिर पर सोहत चौतनियाँ ।। बाजै०।।
जसुमति सुत को चलन सिखावै, अगुली पकरि लिये दोउ जनियाँ ।
छोटे-छोटे चरन, चतुर्भुज मूरति, अलक झलक रही नागिनियाँ ।। बाजै०।
सिव-ब्रह्मा जाकौ पार न पावै, ताहि नचावै ग्वालिनियाँ ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तीन लोक के तुम धनियाँ ।। बाजै०।।

[२५]

उठो जी, अब जागो नदकिसोर ।
चदा जागे, सूरज जागे, तारे लाख किरोर ।।
सग के गोपी-ग्वाला जागे, बन मे जागे मोर ।
ग्वाल-बाल सब द्वारे ठाडे, बसी की घन घोर ।
ओर-पास रतनाकर जागे, और जागी वृषभान-किसोर ।।
ओर-पास साधुन की मढियाँ, बाजत सखन की धुन घोर ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन मेरी डोर ।।

दधि-लीला

[२६]

दधि मथत ग्वालि गरबीली है ।
बडी-बडी अँखियाँ, नैनन मे सुरमा रामा,
भौहे चलावै कटीली है ।। दधि० ।।
माँह बरा-बाजूबद सोहै,
कगन-कील सजीली है ।
गोरी-गोरी बहियाँ, हरी-हरी चुडियाँ रामा,
बहियाँ चलावै ढीली है ।। दधि० ।।
अँगना मे ठाडौ प्यारौ दधि जो माँगै,
वोह नहि देत हठीली है ।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,
हरि के चरन बसीली है ॥ दधि० ॥

[२७]

तनक दही ऐ पिवा जइयो, सुनि बरसाने वारी !
सद ल्योनी माखन की लइयो,
अपने ई हात खबा जइयो ।
जो तेरी सास लडै घर तोते, वाऊँ,
ऐ सीग दिखा अइयो ॥ सुनि० ॥
जो तेरौ पती सती ! तोइ बरजै,
वाऊ ऐ खिरक बताइ अइयो ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,
हरिचरनन चित लाइ जइयो ॥ सुनि० ॥†

[२८]

दधि पी ल स्याम सलौना !
काहे की तेरी बनी है मथनियॉ, कान पात के दौना ?
आठ काठ की बनी है मथनियॉ, कदम पात के दौना ।
कौन घाट पर ग्वाल जुरे है, कौन घाट पर कान्हा ?
चीर घाट पर ग्वाल जुरे है, कालिदी पर कान्हा ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन चित लाना ॥

गोपियो का उलाहना

[२९]

नदलाला दही मेरो खाय गयौ री ।
कछु खायौ, कछु ए ढरकाऔ, ग्वालन हाथ लुटाय गयौ री ।
लाख कही, मेरी एक न मानी, मन चाही बात बनाय गयौ री ॥
तोड-फोड सब दई मटकियाँ, जोरी कर धमकाय गयौ री ।
जाय कहौ जसुदा के आगै, तेरौ लाल इतराय गयौ री ॥
सॉवरी सूरत, माधुरी मूरत, जो मन मॉय समाय गयौ री ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, आवागमन मिटाय गयौ री ॥

---

†पोद्दार अभिनदन ग्रथ का ब्रज लोक साहित्य सकलन, पृ० १,००० ।

[३०]

मेरी दधि की मटुकिया लै गयौ री।

आप खाय और ग्वाल खवावै, रीती कर लुडकाय गयो री ।।

छोटे-छोटे हाथ, जाकी बहियाँ हू छोटी, छीको हाथ कैसे पाय गयौ री ।

दधि कौ तो दधि मेरौ वा ने खायौ, ई डुरी कूँ जमना बहाय गयौ री ।।

वृन्दाबन की कुज-गलिन मे, तिरछी नजरिया दिखाय गयौ री ।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हँस-हँस कर बतराय गयो री ।।

[३१]

जसोदा तेरे लाला ने, मेरी दई है मटुकिया फोर ।

दही की मटुकी धरै सीस पर, मै आई बडी भोर ।। जसोदा० ।।

आन अचानक कुज गलिन मे, मिलि गयौ नद किसोर ।

मोसे कहत नाच मेरे सग मे, करि बिछअन की घोर ।। जसोदा० ।।

हम न बसेगी अब या ब्रज मे, लियौ सबन मुख मोर ।

छोटी सी कोई और नगरिया, लेगी अनत टटोर ।। जसोदा० ।।

गहवर बन और खोर साकरी, नित नई लीला होय ।

मारग मेरौ घेर लियौ है, मटकी डारी फोर ।। जसोदा० ।।

'चदसखी' यो कहै ग्वालिनी, मती जतावै जोर ।

प्रीत करो या नदनदन से, जैसे चद-चकोर ।। जसोदा० ।।

[३२]

अपुनौ गॉव लेउ नदरानी ! हम कहूँ अत रहिगे जाय ।

सूनी बाखर, खोलिकै सॉकर, घर भीतर घुसि जाय ।

छीके पै ते माखन खावै, दूध देय फैलाय ।।

हम जमुना अस्नान करन जायँ, चीर चोरि लै जाय ।

लै कै चीर कदम पै बैठ्यौ, गूठा देय दिखाय ।।

हम दधि बेचन जायँ वृन्दाबन, मारग मे मिलि जाय ।

देखत मे वारौ सौ लागे, हाल बडौ है जाय ।।

साँवरी सूरत, माधुरी मूरत, मो मन गई सँमाय ।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, बार-बार बलि जाय ।।

[३३]

मानत ना, जसोदा ! तेरौ बनवारी ।
घर कौ छोडचौ माखन-मिसरी, गुजरी की छाछ लगै प्यारी ।
घर कौ पलँग रेसमी छोड्यौ, गुजरी की खाट लगै प्यारी ।।
घर कौ छोडयो साल दुसाला, कुब्जा की गुदडी लगै प्यारी ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन कमल की बलिहारी ।।

यशोदा की शिक्षा

[३४]

माखन की चोरी छोड, साँवरे ! मै समझाऊँ तोय ।
मोसे कही गउअन पर जाऊँ, रह्यौ खिरक मे सोय ।
काहू ग्वालिन से आँख लगी तेरी, गई कमरिया खोय ।।
नौ लख गाय नद बाबा के, नित नयौ माखन होय ।
माखन-चोर कहे सब ग्वालिन, लाज लगै है मोय ।।
आई सगाई बरसाने से, नित उठि चर्चा होय ।
राजघरा की लाडली वो, हँसी हमारी होय ।।
यह चोरी मोसे नही छूटै, होनी होय सो होय ।
'चदसखी' मैया के आगे, दियौ कन्हैया रोय ।।

गेद खेल

[३५]

खेलन आये री, दुपहैरी मे नदलाला ।
चकई-लेटुआ वे सँग लाये,
अरी, डोर री फिरावे सखी, नदलाला ।
मै रिसियाय रही मन अपने,
अरे, दै तारी री हँसे वे नदलाला ।।
मै पछिताय रही मन अपने,
रूठ गये री सखी, नदलाला ।
'चदसखी' भज बाल-कृष्ण छवि,
वारी-वारी री बार-बार नदलाला ।।

[३६]

अरी ए री ग्वालिन, मत गेद री चुरावै।
अब तक गेद परी मारग मे, काहि कूँ दुबकावै ।।
एक गेद की, दो लै लऊँगौ, जा गलियन मे ग्वालिन फिर नहि आवै।
तू तो कान्हा फिरै दिवानौ, झूठे झार लगावै ।।
कस रजा से जाय कहूँगी, कुनबा सहित तोहि पकड बुलावै।
लाल-लाल नैना कर ग्वालिन, काहे को डरपावै ।।
कस खसम कौ जोर दिखावै, ग्वालिन ले चो नॉय आवै ।।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, बाँसुरी बजावै कान्हा, मन मुसिकावै।

नाग-लीला

[३७]

कालीदह पै खेलन आयौ री, मेरौ वारौ सौ कन्हैया।।
काहे की या ने गेद बनाई, काहे कौ डडा लायौ री।
पट रेसम की गेद बनाई, चदन डडा लायौ री।। मेरौ० ।।
मार्यौ टोल गेद गई दह मे, वो गेद के सँग ही धायौ री।
नागिन री तू नाग जगाय दै, वो नाग नाथिवे आयौ री ।। मेरौ० ।।
नाग नाथि रेती पै डार्यौ, फन-फन पै बैन बजायौ री।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, यह जीवन प्रान हमारौ री।। मेरौ० ।।

चीर-लीला

[३८]

अकेली मत जाओ राधे, जमुना के तीर।
राह-बाट में चोर लगत है, सुदर स्याम सरीर ।। अकेली० ।।
तुम बेटी वृषभान-दुलारी, वे हैं, जाति अहीर।। अकेली० ।।
जब तुम जमुना न्हाहवै धसौगी, चोरै तुम्हरे चीर।
लेकर चीर कदम चढि बैठे, तुम तो जडाउ ठडे नीर ।। अकेली० ।।
माँगै चीर, नही दे मोहन, ऐसे है बेपीर ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन अधीर।। अकेली० ।।

कान्हा बैठौ कदम की डारियाँ।
लै कै चीर कदम चढि बैठे, हम जल माँहि उघारियाँ ।।
चीर हमारौ दे दै कान्हा, आवत लाज तिहारियाँ।
चीर तुम्हारौ जब हम देगे, हो जावो जल से न्यारियाँ ।।
जल से बाहर किस बिधि आवे, तुम हो पुरुस हम नारियाँ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तुम जीते, हम हारियाँ ।।

[४०]

गो-दोहन

खिरक बिच क्यो ठाडी राधा प्यारी !
माथे हाथ दिये मन सोचत, कहाँ लगी तेरे प्यारी ।।
देखेगे सो कहा कहेगे, सुन वृषभान-कुमारी।
अब ही लाल गये गोअन मे, आवन की है तैयारी। ।
बसी बाजि रही मोहन की, मोहि लई ब्रज-नारी।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तन-मन-धन बलिहारी ।।

[४१]

आवत है बन से लिएँ गैया।
आगै-आगै गैया, पीछै-पीछै बछडा रामा, जा पीछे मेरो कुँवर कन्हैया ।।
मोर-मुकुट पीताबर सोहै रामा, बगल मे सोहै हरि के काली सी कमलिया।
ग्वाल-बाल सब सँग में आये रामा, पीछे से आये बलदाऊ जी के भैया ।।
गैया-बछडा खिरक मे बाँधे रामा, महलन मे आ गयौ मेरौ कुँवर कन्हैया।
गगन धूर मुखडे पै छाई रामा, लै अचल पौछे वाकी मैया ।।
छोडो बछडा, लाओ दुहनिया रामा, झटपट दुहि लाऊँ राधे जी की गैया।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हा-हा खात, परति हरि के पैया ।।

[४२]

नैक पठै दै, मोहन जी को मैया !
हठ कर बैठी सुघड ग्वालिनी, सग लिवाय चल्‌गी कन्हैया।

अति बिलखात, मिलत नहि गैया रामा,
जाही के हाथ मिलैगी मेरी गैया ।।

नद हँसे, जसुदा मुसकाई रामा,
जाओ लाल ! दुहओ जाकी गैया ।

हँसि मुसिकाय कही मोहन ने रामा,
हम ही अनोखे जा ब्रज मे दुहैया ।।

ग्वाल-बाल सब पचि-पचि हारे रामा,
पचि हारे बलदाऊ जी से भैया ।

छोडो बछडा, लाओ दुहनिया रामा,
झटपट दुहि दऊँ राधे जी की गैया ।।

लेकर दूध गये महलन मे रामा,
झटक दई है श्री राधे जी की नैयाँ ।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,
हा-हा करि हरि की लेत बलैयाँ ।।

गोवर्द्धन-धारण

[४३]

कारी कामर वारौ री । मेरौ लाला, कारी कामर वारौ री ।।
सात बरस के साँवलिया ने, गिरवर धारौ री ।
मात जसोदा यो कहै, मेरौ लाला वारौ री ।।

मोहन मुरली वारौ री, जसुमत-नद दुलारौ री ।
इद्र चढयौ घन घोर कै, कर दियौ घोर अँधियारौ री ।।
मुरली वारे लाल ने, या कौ गरब निकारौ री ।
'चदसखी' की बीनती, या पै तन-मन वारौ री ।।

[४४]

गिर न पडे गोपाल ! गिरवर, गिर न पडे गोपाल ।
ब्रज की सखी सब पूजन निकसी, भर-भर मोतियन थार ।

इदर कोप चढेउ ब्रज ऊपर, बरसत मूसल धार ।।
सात दिवस मघवा झर लायौ, ब्रज मे पडी न फुहार ।
सख, चक्र, गदा, पद्म विराजै, नख पर गिरवर धार ।।
ग्वाल-बाल सब गिरवर नीचे, मुरली बजावें, नदलाल ।
मोर-मुकट मकराकृत कुडल, तिलक विराजै भाल ।।
पीताबर की कछनी काछै, बाँके नयन विसाल ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, निरखत मुख नदलाल ।।

राधा-रूप वर्णन

[४५]

अब चलि आईं राधे बनि कै ।
सालू सरस, कसब कौ लँहगा, चोली के बद कसि कै ।।
मुख मे पान, नैन मे सुरमा, माथे चद्रमा धरि कै ।
नँहनी नँहनी दतियाँ, उजरी बत्तीसी, हँसत फूल मानो झरि कै ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन चित धरि कै ।।

[४६]

राधे आई सजि कै देखो, अब प्यारी आई सजि कै ।
नैनन मे कजरा, तिरछी नजरिया, माथे चद्रमा धरि कै ।
उजली बत्तीसी, मुख मे बिडिया, बोलै फूल मानो बरसै ।। देखो०।।
बडे-बडे बिछुआ, नँहने-नँहने बाजे, ठुमक-ठुमक पग धरि कै ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन चित धरि कै ।। देखो०।।

[४७]

घूँघर वाले बाल, राधे तेरे घूँघर वाले बाल ।।
सुरझावै सुरझत है नाँही, अपने हाथ सम्हाल ।
रतन जतन कर बेनी गुह दई, मोतिन माँग सम्हाल ।।राधे०।।
लै दरपन मुख देखन लागी, कैसौ बन्यौ सिँगार ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन बलिहार ।। राधे०।।

[४८]

कजरा न दिया, राधे जुलम किया है ।
जे कजरा मोहन बस कीन्हो, मोह लिया री राधे, मोह लिया है ।।
जे कजरा मेरे मायके से आयौ, तुमने न लिया मोहन, तुमने न दिया है ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन राधे चित्त दिया है ।।

[४९]

कैसे व्याहूँ राधे, कन्हैया तेरौ कारौ ।
घर-घर की वह गऊ चरावै, ओढै कबल कारौ ।
छीन-झपट दधि खात बिरज मे, कैसे चलैगौ राधे कौ गुजारौ ।।
मेरी राधा अजब सुदरी, तेरौ कन्हैया कारौ ।
कारौ-कारौ मत कह ग्वालिन, है ब्रज कौ उजियारौ ।
नाग नाथ रेती पर डार्यौ, मारी फूँक कृष्ण भयौ कारौ ।
पीताबर की कछनी काछै, मोहन मुरली वारौ ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, कान्हा है त्रिलोकी सूँ न्यारौ ।

पनघट-लीला

[५०]

तुम तो जावो राधे ! पनियाँ भरन कूँ, प्रेम कौ फद लगा लाव री ।
इत मथुरा, उत गोकुल नगरी, वृन्दाबन हो कै आव री ।।
वो नद जी कौ कुँवर अनाडी, तू अछूती कैसे आव री ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, रग में झकाझक होय आव री ।।

[५१]

सखी, तेरौ नाम बता दे पनहारी ।।
कौन घर बहू, कौन की बेटी, कहो कौन घर नारी ?
नद-घर बहू, वृषभान की बेटी, सिरी कृष्ण घर नारी ।।
सिर पर घडा, घडे पर झारी, चाल चलै मतवारी ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन कमल की बलिहारी ।।

[५२]

पनघट दै छोड, भरूँ गगरी।
सब सखियाँ जल भरन जातही, मोहन रोक लई डगरी ।।
सखियन सँग वृषभान-नदनी, काँपन लाग गई पग री।
ग्वाल बाल सब सखा कृष्ण के, ताक-ताक मारत कँकरी ।।
बरजि रही, बरज्यौ नहि मानत, स्याम करत झगरौ-झगरी
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, सीस धरौ तुम्हरौ पग री ।।

[५३]

मोय जमुना भरन दे पानी, मत रोकै मोहन दानी।
या ब्रज मे तुम भये अनोखे, रोकत नार बिरानी ।।
घाट-बाट सब रोकत डोलो, कैसे भरूँ जल-पानी।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, मूरत देखि लुभानी ।।

[५४]

मोहन, मेरी गगरी उठाते जइयो।
भारी गगरी उठत नाहि हम पै, तुम नैक हाथ लगाते जाइयो।
मटुकी उठाई कहा दोगी, ग्वालिन ! नैक घूँघटा खोल बतइयो ।।
घूँघट मे तुम का लोगे मोहन, कुज गलिन मे आय जइयो।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, प्रीति के बोल सुनाय जइयो ।।

[५५]

कन्हैया, मेरी गागर भर दैहो।
अजी, भला भर दे, सिर पै धर दैहो।
हमरे सँग की दूर निकस गई, सास ननद कौ डर दैहो ।।
हौ जमुना जल भरन जात ही, बहियाँ पकड मोय वर दैहो।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन-कमल तेरे सिर दैहो ।।

[५६]

ना छेडो, गारी दूँगी, रे भरने दे गगरी।
मै जल भरने को आई, और सग सहेली लाई,
पनघट पर रार मचाई, रे भरने दे गगरी ।।ना०।।
मै असल बाप की जाई, तेरौ बदलौ लूँगी चुकाई,

नरी बसी दँू छिनवाई, रे भरने दे गगरी ।। ना०।।
मैं कसराय ढिग जाऊँ, और सारौ हाल सुनाऊँ,
मन चाह्यौ दड दिलाऊँ, रे भरने दे गगरी ।। ना०।।
मोहि जानत नाहिं कन्हाई, बन-बन मे गाय चराई,
तो पै 'चदमखी' बलि जाई, रे भरने दे गगरी ।। ना०।।

[५७]

काँकरिया मत मारो साँवलिया !
काँकर मारो तो कछु डर नाही, फूट न जाय मेरी सिर की गगरिया ।
गागर फूटे राम कछु डर नाही, भीज न जाय मेरे सिर की चुनरिया।।
चँूदड भीजे राम कछु डर नाही, लचक न जाय मेरी पतली कमरिया ।
चदसखी' मोहन कौ मिलिबो, मिलै न बारबार, साँवलिया ।।

[५८]

गागरिया जनि फोरौ लाल जी, नहिं तोहि देऊँगी गारी ।।
मैं जमुना जल भरन जात ही, बीच मिले गिरधारी ।
गागर फोरी, मोरी बहियाँ मरोरी, मुतियन की लर तोरी ।।
तुम हो ढोटा नदराय के, मैं वृषभानु दुलारी ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तुम जीते, मैं हारी ।।।

[५९]

तू टेढौ, मेरी टेढी रे गगरिया ।
तू टेढौ है नद बाबा कौ, मै टेढी वृषभान-दुलरिया ।।
टेढौ ही तेरौ मोर मुकट है, मेरी तो टेढी, लाल! सिर की इडुरिया ।
टेढौ ही तेरौ पचरँग पेचौ, मेरी तो टेढी लाल, सुरख चुनरिया ।।
जमुना भी टेढी, टेढी कलँगी, और टेढी लाल! गोकुल नगरिया ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चिरजीवी रहो स्याम सँुदरिया ।।

ईंडुरी की चोरी

[६०]

हमारी ईंडुरिया देउ कान्हा ।
मेरी ईंडुरी मे जड रहे मोती। तेरी जाति न जानँू गोती ।।
मेरी ईंडुरी मे जड रहे हीरा। तेरी जाति न जानँू अहीरा ।।

परो इँडरी मे जड रह पन्ना। तू घर-घर डोलै है धन्ना ।।
अब मथुरा मे मैं जाऊँ। तोय खुरचन-पेडा लाऊँ ।।
अब पीहर मे मै जाऊँ। तोय कुरता-टोपी लाऊँ ।।
तू 'चदसखी' कौ प्यारौ। तू सब ब्रज कौ रखवारौ ।।

[६१]

बता दे कान्हा, ईंडुरी कौ चोर ।।
तू मत जाने कान्हा! इकली-दुकली, सात सहेली मेरे साथ।
तू मत जाने कान्हा! दूर दिसा की, बरसानौ मेरौ गाँम ।।
तू मत जाने कान्हा! चुपकी रहूँगी, सहर करूँगी बदनाम।
तू कान्हा! मेरौ नाम न जाने, राधा प्यारी मेरौ नाम ।।
तू मत जाने कान्हा! घास-फूस की, हीरा जडे है किरोर।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन मेरी डोर ।।

वशी-चोरी

[६२]

श्री राधा रानी! दै डारो न बाँसुरी मोरी।
जा बसी मे मेरे प्रान बसत हैं, सो बसी गई चोरी ।।
सोने की नाही कान्हा! रूपे की नाही, हरे बाँस की पोरी।
काहे से गाऊँ राधे! काहे से बजाऊँ, काहे से लाऊँ गैयाँ घेरी ।।
मुख से गावो कान्हा! ताल सो बजावो, लकुटी से लावो गैयाँ घेरी।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि-चरनन की चेरी ।।

[६३]

स्याम की बसी बन पाई ।
उठो जी जसोदा मैया, खोलो जी किवाडी, मै बसी घर देवन को आई ।।
बहुत दिनन के उनीदे री मोहन, सोवन दै वृषभान की जाई।
इतनी सुनिकै निकस आये मोहन, बसी के सँग मेरी पोथी चुराई ।।
कान न सुनी, न आँखन देखी, चलो तो देऊँ मै ठौरहु बताई।
'चदसखी भज बालकृष्ण छवि, दोऊ पढे एकहि चतुराई ।।

[६४]

एरी माँ, बसी वारौ कान्ह।
चद-वदन, म्रिग-लोचन राधे, मोह्या स्याम सुजान ।।
गढ मथरा की गूजरी, गढ गोकल कौ कान्ह।
अधबिच झगडो माँडियो, सरे माँगे दही कौ दान ।।
कब के तुम दानी भये, कब हम देती दान।
बाबा नद की धेन चरावै, देख्यौ अनोखौ कान्ह ।।
मोर-मुकट पीताबर सोहै, कुडल झलकत कान।
मुखडे ऊपर मुरली सोहै, केसर-तिलक लुभान ।।
जमना के नीरें-तीरे रास रचावै, बसी मे सुर ग्यान।
बसी बजा मेरौ मन हर लीनौ, मार विरह कौ बान ।।
सुर-नर-मुनि-जन ध्यान धरत है, गावत वेद-पुरान।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि-चरनन मेरौ ध्यान ।।

[६५]

जावो, जावो कन्हाई, मोसो रार क्यो मचाई ।।
जान गई तुम्हरी चतुराई, कुबरी सो तुम प्रीति लगाई ।
लपट-झपट मोरी फोरी मटुकिया, और चुरियाँ करकाई ।।
कबहूँ न दीनौं दान कन्हाई, नई दान की रीति चलाई ।
कबहूँ न पैहौ दान कन्हाई, नाहक करत ढिठाई ।।
बन-बन मे तुम धेन चराई, अपने मन मे करत बडाई ।
कसराय सो जाय पुकारूँ, भूल जाय ठकुराई ।।
ग्वाल-बाल सब लिये बुलाई, कछु खाई कछु धरनि गिराई ।
दई मटुकिया फोड, स्याम पर 'चदसखी' बलि जाई ।।

[६६]

मथुरा मे हरि सर्व मई ।
हम दधि बेचन जात वृदावन, मारग मे मेरी बाँह गही ।।
मेरौ तो कन्हैया पाँच बरस कौ, सो कैसे तेरी बाँह गही ?
जिन गलियन मेरौ फिरै री कन्हैया, उन गलियन राधे काहे को गई ।

जमुना के तीर, कदम की छैंयाँ, मोहन मुरली बाज रही।
'चदसखी' भज बाल-कृष्ण छवि, चरन कमल चित लाय रही ॥

[६७]

कौन गुनाह दवि लूटी रे कान्हा मोरी ॥
वृ दाबन की कुज गलिन मे, धर बहियाँ झकझारी।
या ब्रज मे नहि हितू हमारौ, लोग कहै सब झूठी ॥
लपट-झपट मोरी बहियाँ मरोरी, सिर की गागर फूटी।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हा-हा करतहि छूटी ॥

[६८]

छाँडो लगर, मोरी बहियाँ गहो ना।
जो तुम मेरी बहियाँ गहो हो, नैनाँ मिलाय मेरे प्रान हरो ना ॥
हम तो नारि पराये घर की, हमारे भरोसे गोपाल रहो ना।
वृ दाबन की कुज गलिन मे, रीति छाँडि अनरीति करो ना ॥
जाय पुकारो कसराय पै, तुम्हरी बाते एक सहो ना।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन-कमल चित टारे टरै ना ॥*

[६९]

मनमोहन कुज बिहारी जी, मत रोको मोरी गैल।
मै दधि बेचन को जाती, मेरे सग सहेली-साथी,
मै तुमसे हूँ सरमाती जी ॥ मत रोको मोरी गैल० ॥
तुम ओढ कमरिया कारी, अब कहा करहु बनवारी,
हम छाँडि चले ब्रज सारी जी ॥ मत रोको मोरी गैल०॥

---

*इसी से मिलता हुआ मीरा का भजन इस प्रकार है —
छाँडो लगर मोरी बहियाँ गहौ ना ॥
मैं तो नार पराये घर की, मेरे भरोसे गुपाल रहौ ना।
जो तुम मेरी बहिया धरत हो, नयन जोर मेरे प्राण हरौ ना ॥
वृन्दाबन की कुज गली में, रीत छोड अनरीत करौ ना।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, चरण-कमल चित टारे टरौ ना ॥१६४॥
—मीरा-माधुरी, पृष्ठ ४२

हम जसुदा जी पै जावे, सब तुम्हरौ हाल सुनावे,
मन चाह्यौ दड दिलावे जी ।। मत रोको मोरी गैल० ।।
तुम्हरौ 'चदसखी' जस गावै, पर पार कोऊ नहि पावै,
भव-आवागमन छुडावै जी ।। मत रोको मोरी गैल० ।।

वशी-वादन—

[७०]

भोर ही बाजी रे मुरलिया, कैसे धरूँ जिया धीर ।
गोकुल बाजी, वृदाबन बाजी, बाजी-बाजी जमुना के तीर ।
मैं जल जमुना भरन जात ही, भरन न दै मोहै नीर ।।
बैठ कदम पर बसी बजाई रे, बँसरी कौ लाग्यो मोरे तीर ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, आखर जात अहीर ।।

[७१]

बसी जमुना पै बाज रही रे लाल !
छवि निरखन कैसे जाऊँ री आज । बसी जमुना० ।
बसी की टेर सुनी मेरे स्रवनन, तन-मन सुध बिसरी रे लाल ।।
मोर मुकट पीताबर सोहै, चदन-खौर लगी रे लाल ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरनन चेरी भई रे लाल ।।

[७२]

देखि सखी री, मेरौ मन मोह्यो,
फिर बाजी, वह हरि की बँसुरिया ।
बाँस कटाऊँ वृदाबन के,
उपजै न बाँस, बजे न बँसुरिया ।। फिर०।।
एक तौ जरावै मोय नद जी कौ लाला,
दूजै जरावै बैरिन सौत कुबरिया ।
तन जारै जैसे बन की लकडिया,
केस जरै जैसे घास की तरियाँ ।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,

हरि के चरन मोरी लागी रे सुरतियाँ ॥

[७३]

चलो सखी बृंदाबन चलिये, मोहन बेनु बजावै री।
बेनु सुनत सिवसकर मोहे, ध्यान घरत नहि पावै री॥
बेनु सुनत ब्रह्मादिक मोहे, वेद पढन नही पाये री।
बेनु सुनत सुर-नर-मुनि मोहे, भजन करन नही पाये री॥
बेनु सुनत गो-बछरा मोहे, दूध पियन नही पाये री।
बेनु सुनत सब गोपिन मोही, झुड-झुड उठ धाये री॥
बेनु सुनत खग-पछी मोहे, चुगा चुगन नही पाये री।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि-चरनन चित लाये री॥

[७४]

बसी की टेर सुनूँगी। सुनूँगी मै तो० ॥

जो तुम मोहन, एक कहोगे,
एक की लाख कहूँगी॥ कहूँगी मै तो० ॥

जो तुम मोहन साँची कहोगे,
राधा बनिकै रहूगी॥ रहूँगी मैं तो० ॥

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,
चरनो मे लिपट रहूँगी॥ रहूँगी मै तो० ॥

[७५]

दो नैणाँ मे राधे बिलमाई।
बैठ कदम पर बसी बजावै, सब सखियाँ मिल आई।
एक सखी उठ पायल पहरै, दूजी पहन न पाई॥
एक सखी उठ अजन सारै, दूजी सार न पाई।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि-चरनन चित लाई॥

[७६]

जमुना के तीर कान्हा, बसी बजाओ थोडी धीरे-धीरे ।।
जमुना के किनारे बाजी बँसरी, ए री मोहे, पसु-पछी-नाग तीरे-तीरे।
बँसरी की टेर या जियरा लुभावत, पथरा सुनत बहन लागे धीरे-धीरे ।।
सुन-सुनकै सखी धावति, घर के काम-काज छाँडि, चली सीरे-सीरे ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, मोहन-तन बसत बेस पीरे-पीरे।।

[७७]

गावत स्याम सखिन सँग गोरी।
जमुना किनारे बसी बजाई, तान सुनत ग्वालिन भईं बौरी।।
सब गोपी घर-घर से निकसी, सँग चली वृषभान-किसोरी।
सूरत देखि स्याम सुधि भूली, खडी रही दोऊ कर जोरी।।
पूछत स्याम कहाँ तुम आईं, लोक-लाज कुल की सब बोरी।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन मे लग रही डोरी।।

[७८]

कैसी बसी बजाई बलवीर!
स्रवन सुनत सुधि रही न तन की, जियरा धरत न धीर।
गोकुल बाजि, वृन्दाबन बाजी, तट जमुना के तीर।।
बरज रही, बरज्यौ नहिं मानै, आखर जात अहीर।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, थिर बहै जमुना-नीर।।

केलि-क्रीडा

[७९]

राधे फूलन मथुरा छाई।।
कितने फूल सरग सो उतरे, कितने मालिन लाई।
उडि-उडि फूल गिरे जमुना मे, राधे जी बीनन आई।।
चुनि-चुनि कलियाँ हार बनावै, स्यामहिं को पहराई।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन चित लाई।।

[८०]

मै तो तोरा फुलवा बिनन गई स्याम!
फुलवा बिनन गई, कलियाँ चुनन गई, एक पथ दो काम।

घर जाऊँ तो मेरी सास लडेगी, नाम होब बदनाम ।।
बहियाँ मुरक गईं, चुडियाँ करक गईं, अब का करूँ, मेरे राम !
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, प्रगटे मथुरा धाम ।।

[८१]

मोहन चलो जी कदम की छैयाँ, कदम की छैयाँ ।
मोरे डारो गले में बैयाँ ।।
राधे रानी, तेरे हार हिये मे सोहै री, हिए मे सोहै ।
तेरी चितवन मेरो मन मोहै ।।
मोहन, तू जमुना निकट भयौ ठाडौ, निकट भयौ ठाडौ ।
मोसें नेहा लगायौ अति गाढौ ।।
राधे रानी, तू तो जमुना निकट भई ठाडी, निकट भई ठाढी ।
मोरी लगी है प्रीत अति गाढी ।।
मोहन, तेरे कान कुडल, गले माला, कुडल गले माला ।
तेरे नैना बने है विसाला ।।
राधे रानी, तेरे सग विरज की सखियाँ, विरज की सखियाँ ।
मोरी लागी है निमानी अँखियाँ ।।
मोहन, तू 'चदसखी' कौ प्यारौ, सखी कौ प्यारौ ।
तू है नद जू कौ राज-दुलारौ ।।

[८२]

कैसे लौटूँ रे बिहारी नदलाला ।
प्राब होत गऊन के पाछै रामा, सँग लिएँ गोपी-ग्वाला ।
मोर-मुकट पीताबर सोहै रामा, गल सोहै फूलन-माला ।।
जमुना की रेती में रास रच्यौ है, मगन भए गोपी-ग्वाला ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन में चित लागा ।।

[८३]

मेरी उरझी लट सुरझाय जइयो, मोहन ! मेरे कर मँहदी रची है ।
सिर की साडी सरक गई है, अपने ही हाथ उढाय जइयो ।। मोहन०।।
माथे की बिंदिया गिर जो पडी है, अपने ही हाथ लगाय जइयो ।
हा-हा खाऊँ, तेरे पैयाँ परत हूँ, बीरी तनक खवाय जइयो ।। मोहन०।।

कमन-कीले गिर जो गई है, अपने ही हाथ लगाय जइयो,
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन चित लाय जइयो ।। मोहन०।।*

[८४]

तेरौ मुख नीकौ है, कि मेरौ राधा प्यारी ?
दरपन हाथ लियौ नदनदन, साँची कहो वृषभान-दुलारी ।
हम का कहे, तुम ही क्यो न देखो, मै गोरी तुम स्याम बिहारी ।
हमरौ वदन ज्यो चदा की उजियारी, तुमरौ बदन जैसे निसि अँधियारी ।।
तुमरे सीस पर मुकुट विराजै, हमरे सीस पर तुम गिरधारी ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, दोउ-ओर प्रीति बढी अति भारी ।।

---

*यह भजन थोडे लौट-फेर के साथ कई प्रकार से गाया जाता है । इसी भाव का वर्णन रीतिकालीन काव्य में भी मिलता है ।

राजस्थान में इस भजन का निम्न रूप प्रचलित है—

लट उरझी सुरझाय जा मोहन ! मेरे कर मँहदी लगी है ।
माथे की बिंदिया गिरी रे पलँग पर, अपणे हाथ लगय जा ।
गले का हार मोरा टूट गया है, अपणे हाथ पहराय जा ।। मोहन० ।।
सिर की चुनरिया सरकि गई है, अपणे हाथ उढाय जा ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, अपणी सूरत दिखाय जा ।। मोहन० ।।

—चदसखी रा० भजन स० २९

चूमौं कर - कमल ये, अमल अनूप तेरे,
रूप के निधान, नैक मो तन निहारि दै ।
कहे 'कालिदास' मेरे पास हँसि हेरि हरि !
धरि माथे मुकट, लकुट गहि डारि दै ।।
कुँवर कन्हैया मुख-चन्द की जुन्हैया,
नैक मेरी ओर लोचन - चकोरन विचारि दै ।
मेरे कर मेंहदी लगी है नन्दलाल प्यारे,
लट अटकी है, नैक बेसर सुधारि दै ।।

[८५]

दोऊ मिल करत प्रेम सें बतियाँ।

काहे कौ पलँग, काहे की है पाटी रामा,
काहे कौ बान बुनावै, राधे रानी जी कौ रसिया ?

सोने कौ पलँग, रूपे की है पाटी रामा,
रेसम बान बुनावै, राधे रानी जी कौ रसिया ।। दोऊ०।।

काहे कौ दिवल, काहे की है बाती रामा,
काहे कौ घिरत जरावै, राधे रानी जी कौ रसिया ?

सोने कौ दिवल, कपूर की बाती रामा,
प्रेम कौ घिरत जरावै, राधे रानी जी कौ रसिया ।। दोऊ०।।

काहे की सौड, काहे कौ है गद्दा रामा,
काहे के तकिया लगावै, राधे रानी जी कौ रसिया ?

रेसम की सौड, फूलन कौ है गद्दा रामा,
फूलन के तकिया लगावै, राधे रानी जी कौ रसिया ।। दोऊ०।।

काहे की चौपड, काहे के है पाँसे रामा,
काहे की है बाजी लगावै, राधे रानी जी कौ रसिया ?

सत्य की चौपड, धरम के है पाँसे रामा,
प्रेम की बाजी लगावै, राधे रानी जी कौ रसिया ।। दोऊ०।।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,
नेह ते नेह लगावै, राधे रानी जी कौ रसिया ।। दोऊ०।।

[८६]

तरी साँवरी सूरत मन बसिया।
हो जी, आज यही रहो राम रसिया ।।
जब हरि मैंने आवत देखे, झटपट खोल दई टटिया।
चदन चौकी कौ बैठन दऊँगी, चरन पखारे सब सखियाँ ।। हो जी० ।।
तातौ पानी, सियरौ उबटनौ, उबट न्हवावे सब सखियाँ।
पाट-पटंबर और पीताबर, बस्तर पैन्हावै सब सखियाँ ।। हो जी०।।

घिस-घिस चदन भरी है कटोरी,
खौर लगावे सब सखियाँ, हार पैन्हावे सब सखियाँ ।
दूध दुहायौ, औट सिरायौ,
चामर राधे भर पतियाँ-बूरौ डारूँ भर पसियाँ ।। हो जी० ।।

छप्पन भोग, छत्तीसो व्यजन, थार परोसें सब सखियाँ, भोग लगावे सब सखियाँ।
सोने की झारी, गगाजल पानी, बीरियाँ चबवावे सब सखियाँ ।। हो जी० ।।

चुन-चुन कलियन सेज बिछाई, चरन पलोटें सब सखियाँ ।
चदसखी भज बालकृष्ण छवि, हरि चरनन की मै दसियाँ ।। हो जी० ।।

पान-बीडी

[८७]

बीडी बनावे राधा प्यारी, स्याम को खडी ।।
कत्था व चूना सुपाडी, इलायची पडी ।
बीडी है नागर पान की, वह थार मे धरी ।।

कचन कौ थार हाथ में राधा लिएँ खडी ।
बीडी दई मोहन कों, हरि ने प्रेम से लई ।।

मोहन ने बीडी चाबी, राधा देखती रही ।
होठो की लाली क्या कहूँ, कछु जात न कही।।

गोरे बदन है राधिका, प्रभु साँवरे सही ।
जैसे बादल मे बीजरी, उपमा जात न कही ।।

राधा करै सिंगार, प्रभु मुरली धरी ।
'चदसखी' जोडी तो राधे-स्याम की बनी ।।

मान

[८८]

मान, तू गुमान भरी है री राधा, थोडौ कर मान ।।
लाल बुलावत तू नही आवत,
ये तोमै बान बुरी है री , राधा !

चार पहर तोहै झगरत बीती,
तू नही मनी, तेरी छाया ढली री, राधा ।। थोडौ कर० ।।
ये तोको रीझावन आयौ, अब तो मान,
अब ढील न होगी री, राधा ।
'चदसखी' गिरिधर के चरण सूँ,
लिपटी रहियो री, राधा ।। थोडौ कर० ।।

[८९]

मान तजि चल राधा, यदुनदा बुलावै री ।
छोड दे छबीली हठ, छोड दे हठीली हठ ,
तेरे बिन देखै कान्हा पान न चबावै री ।। मान० ।।
मुरलीधर मुरली मे टेरे राधे, तेरौ ही जस गावै री ।
जो तुम मेरे सग न चलोगी राधे, वह तो आप ही आवै री ।। मान० ।।
व्याकुल रहत तोहि बिन देखे राधे, क्यो जियरा तरसावै री ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, राधे वह तो नेह लगावै री ।। मान० ।।

शयन

[९०]

चलो री सखी, सो गये नद-किसोर ।।
रतन जटित कौ पलँग मनोहर, जाकी छवि अति घोर ।
राधा पौढै, कृष्ण पौढावे, रस बस कियौ घन घोर ।।
कृष्ण साँवरे के दरसन करिवे, आवेंगी बडी भोर ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन मेरी डोर ।।

[९१]

स्याम जगावै आधी रतियाँ, मै सोय गई ।
स्याम जगावे मेरी बहियाँ पकड कै,
झुक-झुक आवै मेरी अँखिया ।। मै सोय० ।।
चटक बदरिया एक हु न आई,
बूँद परै मेरी छतियाँ ।। मै सोय० ।।

बूँदर भीजै, मेरी अग पसीजै,

भर-भर आवै मेरी छतियाँ ।। मै सोय० ।।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,

तुम सें लगी है मेरी अँखियाँ ।। मै सोय० ।।

[९२]

सोवत राधा प्यारी, स्याम ने जगाई है ।।

स्याम ने जगाई है, राधा उठ आई है ।

मीडत आँख राधे, लेत जम्हाई है ।। सोवत० ।।

बाँह्रे बाजूबद सोहै, हाथ सोहै कँगना ।

गल बीच हार सोहै, गोदी सोहै ललना ।। सोवत० ।।

कधा पर धोती लीनी, हाथन मे लोटी लीनी ।

ओघा की दातुन तोडी, राधा मुसकाई है ।। सोवत० ।।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,

होत सवेरा राधे जमना न्हावे जाई है ।। सोवत० ।।

यह भजन कुछ परिवर्तन के साथ निम्नलिखित रूप में भी गाया जाता है—

[९३]

सोवत राधा प्यारी कृष्ण न जगाइये ।।

कृष्ण न जगाइये, राधा उठि आइये ।

मीडत आँख राधा, लेत जम्हाइये ।। सोवत० ।।

बगल मे धोती लिये, हाथ मे लोटा लिये ।

ओघा की दातुन तोडी, राधा मुसकाइये ।। सोवत० ।।

गल मे तो हार सोहै, बाँहि सोहै बाजूबद ।

हाथ मे तो खडुआ सोहै, प्यारी छवि छाइये ।। सोवत० ।।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,

सखियो के सग राधे जमुना सिधाइये ।। सोवत० ।।

होली

[९४]

वृदाबन आज मची होरी ।

खेलत स्यामा-स्याम सखी री, मृगमद वटकेसर घोरी ।

बरस रहे चहुँ ओर कुमकुमा, अबीर-गुलाल भरी झोरी ।

सखियन सुन धुधकार डफन की, ज्यो की त्यो गृह तज दौरी ।।
सखियन लियौ घेर स्याम कूँ, अब देखें प्रभुता तोरी ।
मोहनी रूप दिखाय सखिन कूँ, दृगन गुलाल लाल छोरी ।।
उर उमगत, बोलत प्रेमातुर, निरदई स्याम अँखियाँ फोरी ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, माफ करो अपराध कियो री ।।

[९५]

कान्हा धरे रे मुकट, खेलै होरी ।
इत स्याम लई पिचकारी रग भर, उत स्यामा केसर घोरी ।।
हाथन लाल गुलाल फेट भर, मारत है भर-भर झोरी ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तेरे बदन कमल पर चित चोरी ।।

[९६]

कान्हा धरे रे मुकट खेलै होरी ।
इत से आये कुँवर कन्हैया, उत से राधे गोरी ।। कान्हा० ।।
कितने बरस के कुँवर कन्हैया, कितने की राधा गोरी ।
बारह बरस के कुँवर कन्हैया, सात बरस की राधा गोरी ।। कान्हा०।।
हिलमिल फाग परस्पर खेलत, अबीर-गुलाल भरे झोरी ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, जुगल चरन पै चित मोरी ।। कान्हा०।।

[९७]

रग-रसिया खेलै फाग, सखी मोरे अँगना मे ।
लाल गुलाल के बादर छाये, रग की परत फुहार ।। सखी० ।।
सारी-चूनर मोरी रग मे भिजोई, आप बचाई छैला पाग ।
मो पै तो रग हँस-हँस डारै, आप जाय छैला भाग ।। सखी० ।।
और कोई मोरे दाव न आवै, साँवरे से गयौ रग लाग ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, धन सखियाँ म्हारो भाग ।। सखी० ।।

[९८]

कैसी होरी मचाई, स्याम चिर चोरी लगाई ।
इत से आई कुँवरि राधिका, उत से कुँवर कन्हाई ।

हिल मिल फाग परस्पर खेलत, सोभा वरनि न जाई ।।
खेलत गेद गिरी जमुना मे, हमसे कहत चुराई ।
बहियाँ पकड मोरी अँगियाँ मे खोजत, एक गई, दो पाई ।।
उडत गुलाल-अबीर-कुमकुमा, चहुँ दिसि रग मचाई ।
हिलमिल करत विनोद सखिन सग, केसर कीच मचाई ।।
पकडो री पकडो स्यामसुदर को, यूँ कह सखियाँ धाई ।
छीन लिये मुरली पीताबर, सिर पर चुनडी उठाई ।।
कहाँ गये तेरे सग के सखा सब, कहाँ गये बल भाई ।
कहाँ गई तेरी मात जसोदा, तुमको लेय छुडाई ।।
फगुवा लिये बिन जान न देगी, तुम चित-चोर कन्हाई ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन-कमल बलि जाई ।।

[९९]

रसिया बन्यौ मदनमोहन प्यारे ।।
फेंट गुलाल, हाथ पिचकारी, जुवती जन मोहन वारे ।
पीताबर की कछनी काछै, क्रीट-मुकट-कुडल वारे ।।
बाजत ताल-मृदग-झाझ-डफ, बीन-उपग-चग न्यारे ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तन-मन-धन तोपै वारे ।।

[१००]

मै जमना न जाऊँ राधे ! मचि रहौ ख्याल री ।।
हम जमना जल भरन जात है, ओढै अपनौ साल री ।
हमहूँ सो आगै जावै, नद जी कौ बाल री ।।
हाथ मे पिचकारी सोहै, फेट मे गुलाल री ।
तुम देखो सखियाँ, नद कौ आवै अटपटी चाल री ।।
तान तो मृदग बाजै, और बाजै खटताल री ।
हौले-हौले बसी बाजै, मदन गोपाल री ।।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि की बलिहार री ।
कालीदह में रास रच्यौ है, मदन गोपाल री ।।

[१०१]

कन्हैया ने घेर लई कुजन मे । मोरी सखियाँ आज नहि सग मे
आयौ फागुन, फिरत दोहाई, स्याम फिरत माधो-बन मे

ढूँढत फिरत, अकेली पावै, कैसे निकसूँ फागुन में।
मै दधि बेचन जात वृदाबन, आन फँसी वाँके फदन में।।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चित लागौ वाके चरनन में।

[१०२]

कन्हैया ने हमसे मचाई होरी।
क्या विरज मे नार थोरी।।
बाजत ताल-मृदग-झाझ-डफ, लेत तान चित चोरी।
अबीर-गुलाल के बादल छाये, मृगमद केसर घोरी।।
अँगुली पकड, मेरौ पौंचो पकड्यौ, बहियाँ पकड झकझोरी।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हमरी समझ भई भोरी।।

[१०३]

साँवरो होरी खेल न जानै।
आई रुत, पर-घर मानै।।
बन से आय के धूम मचावै, भली-बुरी नहि जानै।
गोरस के मिस सो रस चाखै, अँग से अँग लिपटावै।।
दरद मन मे नहि मानै।। साँवरो होरी०।।
हाथ अबीर, गुलाल फेट मे, भर पिचकारी तानै।
होरी कौ खिलैया मोरे द्वार ठाढ़ो, भोरहिं आन जगानै।।
सक मन मे नही आनै।। साँवरो होरी०।।
नद कौ नदन कुँवर लाडलौ, सो मेरे मन की जानै।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, अरज करूँ प्रभु थाँनै।।
प्रेम बगसाओ म्हाँने।। साँवरो होरी०।।

[१०४]

डगर मोरी छाँडो स्याम, बिंध जावोगे नैनन में।।
भूल जावोगे सब चतुराई, लाला! मारूँगी मै सैनन में।
जो तेरे मन होरी खेलन की, तो लै चल कुजन मे।।
चोवा, चदन और अरगजा, छिडकूँगी फागन मे।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, लागी हो तन मे, मन मे।।

[१०५]

सांवरौ होरी मे मारै, लग जावैगी रे,
मत मारै दृगन की चोट ।
पहली चोट उका गई मोहन,
मैं तो कर घूँघट की ओट ।। सांवरो० ।।
दूजी चोट दई नैनन में,
मै तो होय गई लोटापोट ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,
मैं तो लूगी फागुन की गोठ ।। सांवरो० ।।

[१०६]

मोरी अँखियाँ गुलाबी कर डारी, रसिया ।
हाथ अबीर, गुलाल फेट मे, दोय मुठी भरि मारी, रसिया ।
अँगिया मोरी फाडी, बहियाँ मरोडी, पिचकारी भरि मारी, रसिया ।।
मोतियन माँग भरी बिखरी मोरी, सास सुनै देगी गारी, रसिया ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन कमल बलिहारी, रसिया ।।

[१०७]

आज बिरज मे होरी रे रसिया ।
बाजत ताल-मृदग-झाँझ-डफ, और नगारे की जोरी रे, रसिया ।।
उडत गुलाल लाल भए बादर, केसर रग झकझोरी रे, रसिया ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चिरजीवो ये जोरी रे, रसिया ।।

[१०८]

चलो गुइयाँ आज खेलैं होरी ।
कन्हैया सग खेलै हम होरी ।।
एक से एक जोवन मदमाती, काहू की उमरिया थोरी ।
सब सखियाँ हिल-मिल कर आई, भर-भर रग की झोरी ।।
वृंदाबन की कुज गलिन मे, मिल गये नद-किसोरी ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चिरजीवी रहो यह जोरी ।।

[१०९]

रुक्मनि जी के मन में बस गये स्याम ।
कारी घटा स्याम कर मानै, नित उठ करै प्रनाम ॥
स्याम वरन सिंगार बनावै, पूजै सालिगराम ।
मन की माला फेरै रुक्मनी, भजन लगी है हरि नाम ॥
नाना भाँति बनाये मदिर, और तुलसी-अस्थान ।
अन्न खाय ना पानी पीवै, जमो पै करै विश्राम ॥
तुलसी दल ऊपर गगा जल, भोजन कौ का काम ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, गावै सीताराम ॥

[११०]

सुदामा कहै भामिन ते, मोहि मत पठवै री हरि के पास ॥
फाटी पाग और जामा फाटौ, बिन पनही के पाँय ।
बहुत दिनन के बिछुडे मितर, पहिचानेगे नाँय ॥ सुदामा० ॥
मुट्ठी तदुल लिये मँगाई, उनने लिये गाँठ बँधवाय ।
हरि से मिलन सुदामा चाले, हरि के द्वार पुकारे जाय ॥ सुदामा० ॥
हरि ने अपने दूत पठाये, मितर लिये बुलाय ।
चदन चौकी डार दई है, बैठे है कठ लगाय ॥ सुदामा० ॥
तीन लोक दीने ठाकुर ने, और दियौ पाताल ।
मृत्यु लोक की सुरत सँभारी, रुक्मनि पकडौ है हाथ ॥ सुदामा० ॥
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन बलिहार ।
सुदामा कहै भामिन ते, मोहि मत पठवै री हरि के पास ॥

४—आसक्ति

रूपासक्ति

[१११]

मदन मोहन जी सू लगन लगी है, तन-मन डारूँ वारी ।
करुना-सिंधु, जगत के बंधु, संतन के हित-कारी ।।
मोर मुकट पीतांबर सोहै, कुंडल की छवि प्यारी ।
गल सोहै बैजंती माला, निरखत राधा प्यारी ।।
जमुना के तीरे-तीरे धेन चरावै, ओढै कमरिया कारी ।
पैठि पताल कालि नाग नाथ्यौ, फन पै नाँचै गिरधारी ।।
इंदर चढ्यौ कोपि ब्रज ऊपर, नख पर गिरवर धारी ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन कमल की बलिहारी ।।

[११२]

कैसे कटै दिन-रात, मोहन !

राधे याद करै मोहन की, गिरी है मूर्छा खाय ।
सीस मुकट मकराकृत कुंडल, साँवरि सुरतिया दिखाय ।। मो०।।
मोहन के मुख पान, नैनन में सुरमा, तिरछी नजरिया दिखाय ।
पीत बसन, बैजंती माला, पटका की चटक दिखाय ।। मो०।।
कोमल चरन, चंदन के खड़ाऊँ, चाल की मरोर दिखाय ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, बंसी की तान सुनाय ।। मो०।।

प्रेमासक्ति

[११३]

मन लाग्यौ जी स्याम विलासी सो ।
भोर भये निस बीत गई सब, रवि-कर-किरन प्रकासी सो ।
पंछी जागे, बोलन लागे, दरसन भए अविनासी सो ।
जुगल छबीले छवि पर बलि गई, 'चंदसखी' सी दासी सो ।।

[११४]

डगर बताय जा, मोय गैल बताव रे ।
भूल जो पडी हूँ निरजन बन मे, ऊजड पड्यो है ये ठाव रे ।।
जमुना के नीरे-तीरे धेन चरावै, साँझ पडे घर आव रे ।
चदमखी' भज बालकृष्ण छवि, चरनन मे ध्यान लगाव रे ।।

[११५]

राधेस्याम, मेरी रग दो चुँदडिया ।
नद लाल, मेरी रग दो चुँदडिया ।।
आप रगो चाहे मोय रगा दो, प्रेम-नगर की खुली है बजरिया ।
राधेस्याम, मेरी रग दो चुँदडिया ।।
ऐसौ रग रग जो, धोबी धोयें चाहें सारी उमरिया ।
गई रे महीना, बार-तेवारे, आधी उडर्‌यो, चाहे सारी उमरिया ।।
राधेस्याम, मेरी रग दो चुँदडिया ।।

[११६]

कृष्ण पिया मोरी रग दे चुनरिया ।
ऐसी जो रग नारग नाहिं छूटै हो, धोबी धोवै सारी उमरिया ।।
नाँहि रगो तो बैठी रहूँगी हो, बैठे बिताऊँ अपनी सारी उमरिया ।
नाँहि रगो तो मोल मँगाय दो, ब्रज मे लगी है प्रेम बजरिया ।।
चूनरी पहन मै जमुना गई हो, कृष्ण की लगी है मोहे नजरिया ।
तू मति जाने राधा अकेली हो, सात सहेली मोरे साथ रे रसिया ।।
तू मति जाने राधा कुँवारी हो, कृष्ण कन्हैया मेरौ, वर रे साँवरिया ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि हो, हँस-हँस लेऊँ तोरी बलैय्या ।।
कृष्ण पिया मोरी रग दे चुनरिया ।

[११७]

श्रीकृष्ण मेरी गलियो मे आया करो ।
मोर मुकट, गले फूलो की माला, साँवरी सुरतिया दिखाया करो ।
ये अखियाँ दरसन की प्यासी, इनको न तरसाया करो ।।
दिन नहिं चैन, रैन नहिं निदिया, सपने मे दरस दिखाया करो ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, दासी को न बिसराया करो ।।

[११८]

भले से गिरधारी, हमारे घर अइय्यो ।
सास हठीली, नद छबीली, चोरी चोरी अइय्यो ।।
मोरे पिछवाडे धरी नसेनी, सहजइ चढि अइय्यो ।
मोरे अँगना मे कुअटा खुदौ है, वा मे बैठ न्हइय्यो ।।
मलियागिर चदन मँगवावै, घिस-घिस अग लगइय्यो ।
मोरे अँगना मे पलँग बिछौ है, तायै पौढि रहिय्यो ।।
पूरी-कचौरी की ब्यालू दूँगी, रुच-रुच भोग लगइय्यो ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, कदम पै बैठ रहिय्यो ।।*

[११६]

वारी स्याम बलिहारियाँ,
कभी आवो न गलियाँ हमारियाँ ।
आसा लग रही है मोरे मन मे,
तक रही बाट तुम्हारियाँ ।।
कौन सखी ने प्यारे तुम बिरमाये,
हमसे अधिक कौन प्यारियाँ ।
ललिता सखी ने प्यारी, हम बिरमाये,
तुमसे अधिक सोई प्यारियाँ ।।
वृदाबन की कुज गलिन मे,
रहस-रहस जस गाइयाँ ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,
हरि के चरन चित लाइयाँ ।।

[१२०]

मेरौ मन हर लीन्हो, राजा रणछोड
आस-पास रतनाकर सागर, गोमती करत किलोल ।
मोर मुकट पीताबर सोहै, कुडल की झकझोर ।।
वृदाबन मे रास रच्यौ है, नाचत नद-किसोर ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरन-कमल चितचोर ।।

---

*डा० चिन्तामणि उपाध्याय द्वारा भिंद-भदावर क्षेत्र में सकलित ।

[१२१]

मेरे नैनन में रास-रस छाय रह्यो री ।

जल बिच कमल, कमल बिचै कलियाँ,

कलियो मे भँवर लुभाय रह्यो री ।।

जल बिच सीप, सीप बिच मोती,

मोती में जोती समाय रह्यो री ।।

बन बिच बाग, बाग बिच बँगला,

बँगला मे बालम बुलाय रह्यो री ।।

'चदसखी' मोहन बिन देखै,

मेरौ जीव अकुलाय रह्यो री ।।

[१२२]

मनमोहन प्रान प्यारे, टुक गली हमारी आ रे ।
तेरी खूबी के देखन को, दिल तरसता महा रे ।।
तेरी जुलफै, मन की कुलफै, मुसिकान मे अदा रे ।
सुदर सलोने मुख पर, कोटि काम वारि डारे ।।
स्वाति बूँद ज्यो रटै पपीहा, निसि दिन यहै गति मेरी ।
छिन-पल, परै नही कल, मुझे आस लागी तेरी ।।
सब दिल की तू ही जानै, कहिए सो अब कहा रे ।
जिसकी लगन है जिससो, उस बिन रहा न जा रे ।।
घायल बिना दरद की, क्या जाने सार कोई ।
लागी प्रेम चोट जिसके, पीर जाने यार सोई ।।
जल ठौर जोक होवै, मीन जीवै क्यो बिचारे ।
दया कीजै, दरस दीजै, हित चद नद-दुलारे ।।

[१२३]

जानै रे कोऊ वैद न मन की ।

जा तन लगै, सोई तन जानै,

अटपटी प्रीत, लगन है कठिन की ।।

हीरे कौ सार सो हीराई जानै,

सनमुख चोट सहै सिर घन की ।।

'चंदसखी' हित बालकृष्ण छवि,

चिता है मोहै वा सुर गन की ।।

[१२४]

डगर बताय दे, मैं तो साँवरे के जाऊगी ।

पूरी-कचौडी मोय कछूय न भावै, ठडौ-बासी खाय के आऊगी।

साँवरे के ताँई दहीय जमाऊँ, दही की मटकि मैं सिर पर लाऊँगी ।।

साँवरे के ताँई फूल-माला गूँथी, फूल-माला लेकै, डेरे ताँई आऊँगी।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, बैठी-बैठी मै हरि कौ गुन गाऊँगी ।।

[१२५]

बता दे सखी ! साँवरे कौ डेरा किती दूर ।

इत गोकुल, उत मथुरा नगरी, जमना बहै भरपूर ।।

साँवरी सी सूरत, मोहनी मूरत, मुख पर बरसत नूर ।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हाजर रहत हजूर ।।

[१२६]

जाने कब लेवै कू आवैगौ, वौ कान्हा बसी वारौ ।

अब चलिवे की करिय तैयारी, माया ठगिनी ने जात बिगारी,

अरे, प्रेम तें कठ लगावैगौ ।। वो कान्ह बसी वारौ० ।।

गात देखिकै रोय रही हो, जनम अकारथ खोय रही हो,

कब नैन ते नैन मिलावैगो ।। वो कान्हा बसी वारौ० ।।

या ब्रज मे कोउ बसै न माई, पानी मे आग लगावे लुगाई ,

लोग कहत हैं बावरी आई, 'चदसखी' की यही दुहाई,

जाने दूल्हे बनिकै आवैगौ ।। वो कन्हा बसी वारौ० ।।

[१२७]

गागरिया घर धरि आऊँ रे, कान्हा ! ठाडो रहियो कदम की छैयाँ ।

गागरिया घर धरि आऊँ, चूनरिया पलटि आऊँ,

करि आऊँ मैं सोलह सिगारियाँ ।। ठाडो रहियो कदम० ।।

बैठि कदम तरे बसी बजइयो, यहाँ तो चरेगी तेरी गैयाँ ।। ठाडो० ।।

ठाडो रहियो कान्हा, दूर मत जइयो, तेरे-मेरे बीच गुसैयाँ ।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि-चरनन बलि जइयाँ ।। ठाडो० ।।

५—विरह

[१२८]

अब रथ फेरि मुरलिया वारे ।।
चदा तडफै सूरज तडफै, तडफ रहे अब नौलख तारे ।
गैया तडफै, बछडा तडफै, तडफ रहे अब ग्वाल बिचारे ।।
गगा तडफै, जमुना तडफै, तडफ रहे सब नदिया-नारे ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, कब होगे प्रभु दरस तिहारे ।।

[१२९]

पलक न लागै, स्याम बिन पलक न लागै मेरी ।
हरि बिन मथुरा ऐसी लगत है, चदा बिन रैन अँधेरी ।
इत मथुरा, उत गोकुल नगरी, बिच-बिच जमुना गहरी ।।
साँवरे की खातर जोगन हूँगी, घर-घर दूँगी फेरी ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि-चरनन की चेरी ।।

[१३०]

एरी सखी, तैने कही देखा रे, मेरा बसीवाला ?
बन-बन ढूँढ फिरी मेरी सजनी, पैरन पड गये छाला ।।
तन-मन की सुधि भूली री भवन मे; बैरिन बसी ने जादू डाला ।
जब सो भनक परी मेरे स्रवनन, मोही सब ब्रज-बाला ।।
दिन नहिं चैन, रैन नहिं निद्रा, ना जानूँ कैसा चेटक डाला ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छबि, कब मिलिहै नदलाला ।।

[१३१]

मावौ जी, बैरागिन मै न भई ।
लबे केस गेरवा कपडा, तूँबी हाथ लई ।।
अग भभूत, बगल मृगछाला, माला हाथ लई ।
इत मथुरा, उत गोकुल नगरी, बीच मे जमुना बही ।।

गहरी नदिया, नाव पुरानी, अध बिच भवर भई।
धरमी-धरमी पार उतर गये, पापिन डोब दई।।
खेवा होय तो पार लगावैं, ना तो जानि बही।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि की सरन लई।।

[१३२]

माधौ जी, मैं न भई बन-मोर।
मोरा होती, जमुन तट रहती, कुज मे करती किलोल।।
मोरा होती जगल बिच रहती, नाँचत ही मुख मोड।
उड-उड पख गिरे धरनी पै, बीने ब्रज के लोग।।
उन पखन को मुकट बनावे, पहरेगे नद किसोर।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन चित चोर।।

[१३३]

एरी कुबजा ने जादू डारा, जिन मोह्या स्याम हमारा।
सोलह सहस गोपिका त्यागी, कुबजा सग सिधारा।।
निर्मल जल जमुना कौ त्यागौ, जाय पियौ जल खारा।
सीतल छाँह कदम की त्यागी, धूप सहै सिर भारा।।
जादू कीन्हाँ, टोना कीन्हाँ, पढ-पढ मतर मारा।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, आखर स्याम हमारा।।*

[१३४]

हम पर कुबजा सोक रची रे।
हम कुलवती नार छोड के, दासी मनहि जँची रे।
प्रीत की रीति कछू ना जानी, पाती एक न बँची रे।।
ओछे की परतीत न करियै, जग मे होत हँसी रे।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, परबस प्रान फँसी रे।।

---

*इसी से मिलता हुआ एक भजन मीराबाई के नाम से राजस्थान में गाया जाता है। सुश्री पद्मावती जी के मतानुसार मूल भजन चदसखी का है, जिसका गेय रूपान्तर मीरा का भजन है।

[१३५]

अरी एरी, कुबिजा के सिखाये स्याम रूठे ।।
मधुबन जाय भये अब राजा, पाये हैं राज अनूठे ।
मात-पिता बसुदेव-देवकी, नंद-जसोदा के झूठे ।।
आपन निकट रहे भोरा से, फूलन मे रस घूटे ।
हम कूँ आस लगी दरसन की, जाँय प्रान नही छूटे ।।
करि गये कौल-करार सखी री, बचन भये सब झूठे ।
'चंदसखी' राधा नही बस मे, लागे फंद नही छूटे ।।

[१३६]

मोहन के कान लगी कुबडी ।
मेरे आँगन तुलसी कौ बिरवा,
वामैं उपजी जहर-कली ।
घोट-घाटि कुबजा को प्याई,
पी-पी मस्त भई कुबडी ।।
मस्त भई मोहन बस कीने,
बैरिन मेरी भई कुबडी ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि,
हरि के चरन लगी कुबडी ।।

[१३७]

ऊधो, तेरी हम पै बँचै न पाती ।
यह पाती मेरे स्यामसुंदर की, बाँचत फटै मेरी छाती ।।
ऐसे अनोखे कृष्ण रिझाये, है रही जग मे हाँसी ।
सोलह सहस गोपिका छोडी, कुबिजा के भये साथी ।।
ये दुख-सुख की बतियाँ का से कहूँगी, जरै तेल बिन बाती ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन की हूँ दासी ।।

[१३८]

अपनी डगर चल्यो जा रे, ब्रजवासी ।
वृंदाबन के लोग बिसवासी, प्रीत लगाय गरे डार गयौ फाँसी ।

अलगहि रहो, हाथ जनि लाओ, देखैं लोग, करेंगे मोरी हाँसी ॥
तुम तो स्याम सदा के कपटी, लाज न आवत तोहि जरा सी।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तू मेरो ठाकुर, मैं तेरी दासी ॥

[१३९]

बाबा नंद कौ लाला रसिया रे ॥
थाल भरौ गज-मोतियन कौ रे, चौमुख जोडूँ दिया रे।
ठाँडी-ठाँडी आँगन पंथ निहारूँ, क्यूँ तरसावो हो जिया रे ॥
आवन कह गये, अजहु न आये, निपट कठोर हिया रे।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन में जिया रे ॥

[१४०]

बसौ मोरे नैनन में नंदलाल।
साँवरी सूरत, माधुरी मूरत, गल बैजंती माल।
जब से बिछुड गये मनमोहन, तब से भई बेहाल ॥
दरस दिखा, तन-ताप मिटावो, अरज सुनो गोपाल।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तुम दीनन प्रतिपाल ॥*

---

*यह भजन श्री नरोत्तमदास स्वामी का है। राजस्थान में इसी से मिलता हुआ मीराबाई का भजन विशेष प्रसिद्ध है—

बसौ मोरे नैनन में नंदलाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, अरुन तिलक दिय भाल ॥
मोहनी मूरति-साँवरी सूरति, नैना बने बिसाल।
अधर सुधा-रस मुरली राजत, उर बैजंती माल ॥
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
'मीरा' प्रभु संतन सुखदाई, भगत-बछल गोपाल ॥४६ ॥

—मीराँ-माधुरी, पृ० ११

राजस्थानी

१—विनय

स्तुति

[१]

एजी म्हाँरा कृष्णचद्र बनवारी।
थाँरे चरण-कँवल बलिहारी॥
ब्रज भूमी मे जन्म लियो थे, प्रथम पूतना मारी॥
इद्रसेन को गरब मिटायो, नख पर गिरवर धारी।
खेलत गेंद गिरा दई जमना, चढत कदम की डारी॥
पैठ पताल कालि नाग नाथ्यो, फण फण नृत्य मुरारी।
कुज-गलिन मे रास रचायो, सोभा अचरज भारी॥
बिच-बिच गोपी स्याम बिराजै, ज्यो चदा उजियारी।
महा बली कसादिक मारे, भगतन भये सुखारी॥
उग्रसेन को राज-तिलक दे, पुरी बसाई न्यारी।
'चदसखी' तुमरो गुण गावै, मुझको आस तुम्हारी॥१४१॥

[२]

एजी, म्हाँरा दीनानाथ मुरारी।
रखियो अब तो लाज हमारी॥
गज की टेर सुनत ही धाये, त्याग गरुड असवारी।
चक्र सुदरसण चला मारग पर, गज की ज्यान उबारी॥
कीनो कपट भूप दुर्जोधन, द्रौपदि करत उघारी।
कृष्ण-कृष्ण कर टेरण लागी, चीर बढा दियो भारी॥
विप्र सुदामा सखा आयो, बालकपण की यारी।
दियो दलिद्दर खोय, बणाई सुवरण महल अटारी॥
द्वापर मे नग राजा होय, दानी वीर बलकारी।
अध-कूप से बाहर कर दियो, भगत-बछल बनवारी॥

सदा सहाय सतन की कीन्ही, क्यो मोहि प्राण बिसारी।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरण-कँवल बलिहारी ।।१४२।।

[३]

राखो म्हाँरे सरणै आयाँ की लाज।
बेर-बेर मै टेरत हूँ जी, सुणो गरीब-निवाज ।।
भीड पडयाँ द्रौपति-पत राखी, जल डूबत गजराज।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, अविचल रहो थाँरो राज ।।१४३।।

[४]

भजो मन, राधे-नद किसोर।
मात जसोदा पलणा झुलावै, हाथाँ में रेसम डोर ।।
नद बाबा के आँगण खेलत, घुँघरुन की घनघोर।
जमना के नीरे तीरे धेनु चरावै, बसी बजावै मुख मोर ।।
मोर मुकुट पीताबर सोहै, कुडल की छवि ओर।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, राधा कृष्ण री जोर ।।१४४।।

भक्ति

[५]

छोटी-सी लाडी राम-भजन मे कैसे लागी ?
सासू बोली सुण मेरी बहुअड, ऐसा काम नहिं कीजै।
राम नाम तो पीछे लीजै, घर का धधा कीजै ।।
बहुअड बोली, सुण मेरी सासू, ऐसी सीख नहिं दीजै।
राम नाम तो मुख से लीजै, हाथाँ धधा कीजै ।।
न्हाती-धोती, मिंदर जाती, नित चरणो मे रहती।
सासू बैठी टम-टम झाँकै, बहू बैकुंठा जासी।
*
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, सुरग पालकी आसी ।।१४५।।

*इस भजन की एक पक्ति प्राप्त नहीं है।

[६]

करमन की गति न्यारी।

मै किस बिध लिखूँ मुरारी।।

ऊजल पाँख दई बुगले कूँ, कोयल कर दी कारी।।

छोटे-छोटे नैण दिये हँसती कूँ, सोने की अबारी।

बडे-बडे नैण दिये मिरगा कूँ, बन-बन फिरत सिकारी।।

चतर नार झूरै पुतरन कूँ, मूरख जण-जण हारी।

मूरख राजा राज करत है, पडित फिरत भिखारी।।

वेश्या ओढे साल-दुसाला, पतिवरता ऊघारी।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छबि, तन-मन जाऊँ बलिहारी।।१४६।।*

---

*इस भजन के कई पाठ मिलते है। एक प्रचलित पाठ इस प्रकार भी है—

कैसे लिखूँ मुरारी, मै कैसे लिखूँ मुरारी।

मूरख राजा राज करत है, पडित फिरत भिकारी।।

नागर बल फूल बिन तरसे, गेंदा फूल हजारी।

बिधवा ओढे साल-दुसाला, पतिवरताँ नार उघारी।।

पतिवरताँ नार पुत्तर बिन तरसे, मूरख जण-जण हारी।

'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरण बलिहारी।।

२—माहात्म्य

ब्रज-वृंदावन का आकर्षण

[७]

ब्रज मडल देस दिखावो रसिया ।। ब्रज मडल० ।।
ब्रज मडल को आछो-नीको पाणी, गोरी-गोरी नारि सुघड रसिया ।
अगर चदण रो ढोलियो विराजे, अवल रेसमी कूबे कसिया ।। ब्रज मडल० ।।
बालापण मे गउओ चराई, तिण देसे चालो बसिया ।
मुरली तोरी सदा ही सुहावो, मृगनैणी नाँचे रसिया ।। ब्रज मडल० ।।
मटकी फोडी, दही मेरो डारयौ, बाँह पकड मेली घसिया ।
'चदसखी' अब आय मिले है, कृष्ण मुरारी मेरे मन बसिया ।।
ब्रज मडल० ।। १४७ ।।*

[८]

ब्रज मडल देस दिखाय, रसिया ।
तेरी रे बिरज मे गाय बहुत है, धौली धौली गाय, सुरंग बछिया ।। ब्रज० ।।
तेरी रे बिरज मे मोर बहुत है, बोलत मोर फटत छतिया ।
तेरी रे बिरज मे नार बहुत है, आछी-आछी नार, मरद रसिया ।। ब्रज० ।।
तेरी रे बिरज मे चावल धोला, हरी-हरी मूँग, उडद कचिया ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, नद जी को लाल हिये बसिया ।।ब्रज० ।। १४८ ।। †

[९]

कैसे आऊँ रे, साँवरिया ! थारी ब्रज नगरी ।
इत मथरा उत गोकुल नगरी, बीच बहै जमुना गहरी ।।

---

* यह भजन बहुत पुराना है । श्री अगरचद नाहटा के मतानुसार इसका प्रचार स० १७६६ के लगभग राजस्थान में था । होली के दिनों में चग वाद्य के साथ यह अब भी बडे उल्लास से गाया जाता है ।

(विक्रम, मार्गशीर्ष, स० २००९)

† इससे मिलता हुआ एक लोक-गीत ब्रज मे गाया जाता है, जो ब्रजभाषा के गीतों में छप चुका है ।

पाणी चलूँ तो म्हारी पायल भीजै, कूद पड़ूँ भीजूँ सगरी।
केसर कीच मच्यौ आँगन में, रपट गई राधा पग री।।
भर पिचकारी, मुख पर डारी, भीज गई साडी पँचरँग री।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चिरजीवि रहै राधा लगरी।।१४६।।

[१०]

मन, वृंदाबन चाल बसो रे। मान घटो, चाहे लोग हँसो रे।।†
गुर बिन ग्यान, गगा बिन तीरथ, एकादसी बिन वरत किसो रे।।
बिन दीपक के भवन किसो रे, बिना पुत्र परिवार किसो रे।
मन न मिलै वासो मिलवो किसो रे, प्रीत करै फिर पडदो किसो रे।।
प्रीत के कारण कुटम तज्यो है, नद कौ छबीले मेरे मन में बसो रे।
'चदसखी' मोहन रग राची, ज्यूँ दीपक मे तेज रम्यो रे।।१५०।।

---

*इससे मिलता हुआ मीरा का भी भजन राजस्थान में प्रचलित है, जो इस प्रकार है —

कैसे आवों हो लाल, तेरी ब्रज नगरी, गोकुल नगरी।
इत मथुरा, उत गोकुल नगरी, बीच बहै जमुना गहरी।।
पाँव धरौं मेरी पायल भीजै, कूदि परौं बहि जाऊँ सगरी।
मै दधि बेंचन जात वृंदाबन, मारग में मोहन झगरी।।
बरजो जसोदा अपने लाल को, छीनि लई है मेरी नथ री।
रहु-रहु ग्वालिन झूठ न बोलो, कान्ह अकेलो, तुम सगरी।।
हमरो कन्हैया पाँच बरस कौ, तुम ग्वालिन अलमस्त भई।
जाय पुकारें कस राजा सें, न्याव नहीं मथुरा नगरी।।
वृंदावन की कुज गलिन में, बाँह पकरि राधे झगरी।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, साधु सग करि हम सुधरी।।६०।।

—मीराँ-माधुरी, पृष्ठ १५

† चदसखी नाम से ऐसे अनेक भजन प्रचलित है जो उनके रचे हुए ज्ञात नहीं होते। यह भजन भी ऐसा ही मालूम होता है। इसमें एकादशी व्रत का महत्व चदसखी की सम्प्रदायिक मानता के अनुकूल नही है।

आज वृंदावन रास रच्यो है, मैं भी देखण जाऊँगी।
सातूं सिंगार करूँ मोरी सजनी, मोतियन माँग भराऊँगी।
ओढ़ कसूमल पचरँग लहरो, मोहन लाल रिझाऊँगी।।
तारावल तो तार बजावै, मै सुरबीण बजाऊँगी।
नरहरि नृत्य करै हरि आगे, भैरूँ राग सुणाऊँगी।।
ग्वाल होय गिरधारी आवै, मैं ग्वालण बण जाऊँगी।
मोहन दान मही कौ माँगै, कस कौ जोर दिखाऊँगी।।
इसडो रास रचै मोरी सजनी, प्रेम मगन होय जाऊँगी।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, जोत में जोत मिलाऊँगी।। १५१।।

माखन-चोरी

[११]

अब कहाँ जायगो रे, लीन्यो स्याम पकड के। टेक।
निरभय दधि खावण ने बैठ्यो, आगे मटकी धर के।
मोय देख भोलो बण बैठ्यो, खा ले मनस्या भर के ।।
क्यूँ सरमाय गयो रे ।।
नरम कलाई हरि की पकडी, पकडी भुजा सम्हल के।
अब तो कान्ह छुडावण लाग्यो, ऐंठ-मेंठ बल कर के ।।
दाव मेरौ लग गयो रे ।।
सास-नणद मोय बुरी बतावे, नाँव चोरटी धर के।
या बहुअड तो बडी अचपली, ताना देवें हँस-हँस के ।।
जीव मेरो जर गयो रे ।।
मात जसोदा यूँ उठ बोली, कान्ह गये लड्झड के।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, मोर मुकट सिर धर के ।।
दरस दिखाय गयो रे ।।१५२।।*

---

*इसी से मिलता हुआ ब्रजभाषा का भी भजन है, जो इस प्रकार है—
अब कहाँ जायगौ रे, लीन्हो स्याम पकरि कै ।
नरम कलइयाँ हरि की पकडी, पकडी बाँह सँभल कै ।।
ऐंठ-ऐंठ बल खावन लाग्यो, अब कहा जायगौ छल कै ।।
दाब मेरो लग गयो रे ।। लीन्हो स्याम० ।।
छीन-छीन दधि खायो मेरे कान्हा, आगैं मथनियां धरि कै।
हमको देखि बाल बन बैठ्यो, खाय लै मनस्या भरि कै ।।
क्यो सरमाय गयौ रे ।। लीन्हो स्याम० ।।
सास-ननद मोहै बुरी बतावैं, नाँव चोरटी धरिकैं ।
आ बहू ! छिनगारी मिलगी, तानौ दै हँसि-हँसि कै ।।
सारौ घर खा गयौ रे ।। लीन्हो स्याम० ।।
मात जसोदा मही बिलोवै, कहाँ गयौ कान्हा लडिकैं ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, मोर मुकुट सिर धरिके ।।
दरस दिखाय गयौ रे ।। लीन्हो स्याम० ।।

[१३]

नँदराणी, भलो सुत जायो ए।
बरजौ तो बरज्यो नही माने, नाँय डरे वो डरायो ए ।। नदराणी०।।

फलसो खोल, खिडकियाँ खोलै, पीढे ऊपर ऊखल मेलै,
छीको तोड बगायो ए।
मटकी उतार आगे धर मेली, मक्खन भोग लगायो ए।। नदराणी०।।

नौलख धेन नद राजा घर, चोरों के चोर कुहायो ए।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरण चित लायो ए ।।
।। नदराणी० ।। १५३ ।।

चीर-लीला

[१४]

म्हाँरी-थाँरी नाहि बणै, गिरधारी !
ले मोरो चीर कदम चढि बैठो रे, हम जल माँहि उघारी ।।

तमरो चीर राधे ! तमने देस्याँ जी, हो जावो जल से न्यारी ।
जल से न्यारी कान्हा ! किस बिध होवाँ, आवत लाज तिहारी ।।

हमरी लाज क्यो राधे करति हो, हम है पुरुख, तुम नारी ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तुम जीते हम हारी ।।१५४।।

गोपियो से छेड-छाड

[१५]

जावा दे, सलूणा कान्हा, म्हारे डर छै।

तुम ना तो जाणो कान्हा, आई छूँ अकेली, सात सहेली म्हारे सर छै।
तुम ना तो जाणो कान्हा फिरूँ छूँ कँवारी, साँवरियो म्हारो वर छै।।

जो तुम आवो कान्हा पतो रे बताऊँ, नदी के किनारे म्हारो घर छै।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तन मन दीनाँ, अब काहे की कसर छै।।१५५।।

[१६]

जावा दे गुमानीडा कृष्ण, म्हारे डेरे काम छे।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, जमुना किनारे म्हारो ग्राम छे॥
म्हारे आँगन तुलसी का बिरवा, साँवरी सखी म्हारो नाम छे।
जाणो नही तो पूँछ लीज्यौ, कुंज द्रुमन म्हारो धाम छे॥
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, श्री राधा म्हारो नाम छे।
कुंज भवन में ढूँढत डोलौं, रट म्हाने, बतावो कहाँ स्याम छे॥१५६॥

[१७]

मारग म्हारो छोड द्यो गिरधारी॥
उलटो हो ज्या कान्हा! डगर छोड दे, बोझ मरै ब्रज नारी।
सास बुरी, म्हारी बगड पडोसण, नणँद सुणै देगी गारी॥
वृन्दाबन की कुंज गलिन मे, तुम रोको ब्रज नारी।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तुम जीते हम हारी॥१५७॥

[१८]

नँद का, खबर पडेगी तने आज रे।
मै जल जमना भरन जात ही, वैया मरोरी किन काज रे॥
जात-पाँत, कुल-कॉण न मानै, नेक न आवै लाज रे।
'चंदसखी' प्रभु अति ना कीजै, कंसराय को राज रे॥१५८॥

---

*इसी प्रकार का मीराँ का भजन भी है—

जावा दे गुमानी कृष्ण, म्हाँरे घर काम छे॥
थें हो लगर नंद महर के, ब्रज बरसाने म्हाँरो गाम छे॥
जानो नहीं तो पूँछ लीजो, श्री राधा म्हारो नाम छे।
'मीराँ' के प्रभु गिरधर नागर, नाम थाँको बदनाम छे॥३५०॥

—मीराँ-माधुरी, पृ० ८८

दधि की लूट

[१६]

मत दही मेरो लूटो, मै छूँ मथुरा की कान्हा गूजरी।
दधि की मथनिया भई है पुरानी, नई तो मथनिया लाई।
छीक भये मै घर से निकसी, जाकै रोल मचाई।।
दधि कौ दान कदे नहि देवाँ, घणा दिनाँ सूँ आई।
जाय पुकारूँ कसराय नें, भूल जाय ठकुराई।।
दधि कौ दान कद नहिं छोडाँ, मत कर मान-बडाई।
ग्वाल-बाल सब सखा बुला कर, महीडो दियो लुटाई।।
धन हो गोकल, धन हो मथुरा, धन हो जसुदा माई।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि चरणाँ चित लाई।।१५६।।

[२०]

मोहन, तुम जाणे दे मोय घरवा।
मै दधि बेचण जात वृन्दाबन, बीच मिले कान्हा ठगवा।
इत गोकल उत मथरा नगरी, विन फागण कैसे फगवा।।
चोवा-चदन और अरगजा, केसर गागर भरवा।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरण कमल चित धरवा।।१६०।।

गोवर्धन-धारण

[२१]

ब्रज की तोय लाज, मुगट-वारा।
तेरी रे बिरज पर इदर कोप्यो, बरसत है मूसल धारा।
चाँद-सूरज दोय दीपन थरप्या, सँग थरप्या नव लख तारा।
सात समुदर पिरथी थरपी, अडसठ तीरथ है न्यारा।।
ग्वाल-बाल सब किया इकट्ठा, गोवरधन नख पर धारा।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि जीते, इदर हारा।।१६१।।

वैद्य-लीला

[२२]

डस गयो कालियो नाग, राधे जी की अँगुली मे।
सात सखी मिल चली बाँग में कर सोलै सिणगार।।

ऐसो डक दियो काली ने, पीलो पड गयो हाय ।
नाडी वा की ठीक नही है, कीजै कौन उपाय ।।
एक सखी पाणीडो* ल्यावै, दूजी ढोलै बाय ।
तीजी सखी तो औषध ल्यावै, चौथी वैद बुलाय ।।
बरसाणे से वैद बुलाया, बैठ्या पलँग पै आय ।
नाडी की तो कदर न जाणै, नैण से नैण मिलाय ।।
'चदसखी' मोहन की मिलनी, मिलनी बारबार ।
नद महर को कँवर कन्हैया, ले जायगो लेर लगाय ।।१६२।।*

इस भजन का बडे व्यापक क्षेत्र मे प्रचार है । इसके अन्य रूप भी मिलते है, जो इस प्रकार है—

[२३]

डस गयो रे कालियो नाग, राधे जी की अँगुली मे ।
राधा झूलन चली बाग मे, सँग सहेली साथ ।।
ऐसौ डक दियो काली ने, पीलौ पड गयौ गात ।
एक सखी तो करै बिछोणा, दूजी ढोलै ब्यार ।।
तीजी सखी यूँ उठ बोली, लाओ न वैद बुलाय ।
नदगॉव से वैद बुलायौ, बैठ्यौ पलँग पै आय ।।
नाडी की तो कदर न जानै, नैन से नैन मिलाय ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि चरनन चित लाय ।। १६३।।†

[२४]

डस खायो जी भँवर कालो नाग, राधे थारी ऊँगलण मे ।।
राधे की माँ राधे ने बरजे, तू बागण मत जाय ।
फूल बीणता खायो नाग जी, नैण दिया कुम्हलाय ।। राधे० ।।
एक सखी तो पखा डोलै, दूजी चँवर डुलाय ।
तीजोडियाँ वैद्य बुलावै, चौथेडी खावै पछाड ।। राधे० ।।
वृन्दावन मे वैद्य बसत जे, तिनको लेउ बुलाय ।
लेके बसरी झाडो देवे, सणक-सणक जिवडो जाय ।। राधे० ।।
जगल से बूँटी मँगवाहू, राधे ने देऊँ जिवाय ।
जे थारी राधे चगी होवे, ले जाऊँ सघ विवाय ।। राधे० ।।

---

* चदसखी और उनका काव्य, पृ० २० ।
† श्री नरोत्तमदास स्वामी के संकलन से ।

'चदसखी' मोहन सूँ मिलणा, लीला कही न जाय ।
यो कृसन जी मुरली वालो, लाराँ-लाराँ लियो जाय ।। राधे०।।*

वंशी-वादन

[२५]

दधि दूँगी रे साँवरिया प्यारे, वीण बजाय ।
ऐसी रे बजाय, जैसी बनखड सुणै रे,
चरती गाय मगन होय जाय ।
ऐसी रे बजाय, जैसी जमुना पै सुणै रे,
बहतो नीर तुरत थम जाय ।।
ऐसी रे बजाय, जैसी मेरे मन भावै रे,
सगरी सहेलडी मगन होय जाय ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,
हरि-चरणाँ चित दियो है लगाय ।।१६५।।

[२६]

बसी बजाई साँवरे, मैं सुध-बुध भूली रे ।
साँवरिया मोहन आज, बसी कामण गारी रे ।।
घोल भरोसे चौक में, मैं दहीज ठारयो रे ।
रई भरोसे मूमल सूँ, मै आँण घमाडयो रे ।।
दूध भरोसे नीर मे, मै जाँवण दीन्हो रे ।
नीर भरोसे दूध सूँ, मैं सिनान कीन्हो रे ।।
बालक भरोसे बाछियो, मैं गोद रमायो रे ।
बछिये भरोसे बालक ने, मै खूँटे बाँध्यो रे ।।
पगाँ भरोसे पायल ने, मै हाथाँ पहरी रे ।
नाक भरोसे नाथली, मैं कानाँ पहरी रे ।।
साँवरिया गिरधारी, म्हारी कुज पधारो रे ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तन-मन वारो रे ।।१६६।।

---

*यह भजन हाडोती में प्रचलित है। इसे भिक्षुकगण प्राय: भिक्षा मागते समय गाया करते हैं। इसे व्याख्या सहित सुश्री शकुंतला सिरोठिया ने 'सरस्वती' मई, १९५५ के अंक में प्रकाशित कराया था।

[२७]

तैं मेरो मन मोह्यो बसीवाला ! मधरी वीण बजाय कै।
सावण मास बाँस को बिडलो, सीच्यो हैं मन चित लाय कै।
अब तो बैरण भई है बाँसरी, मोहन के मुख आय कै।।
मै जल जमना भरण जात रही, मारग रोक्यौ आय कै।
सँग की सहेली मेरी क्या तो कहैगी, सास-नणद से जाय कै।।
जमना के नीराँ-तीराँ धेन चरावै, मधरी सी बीण बजाय कै।
जा बसी मे साँवरो, इचरज गावै, राधा को नाँव सुणाय कै।।
मोर-मुकट, कानाँ बिच कुडल, तुर्रे-तार लगाय कै।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि-चरणाँ चित लाय कै।। १६७।।

[२८]

देखो री, बाँसरी मे कान्हो राधे-राधे गावै री।
इत गोकल, उत मथरा नगरी, बीच में कान्हो रास रचावै री।।
मोर मुकट पीताबर सोहै, कानन मे कुडल झलकावै री।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चित वाँरे चरणाँ जावै री।। १६८।।

खडिता

[२९]

कहाँ बसिया, मोहन ! रातडली।
काँई थाँगे नाँव भणीजै साँवरा, काँई थाँरी जातडली।
भगत-बछल म्हारो नाँव भणीजै, जदुकुल म्हा-ी जातडली।।
काँई सतभामा रे महल पधारया, काँई कुबज्या से बातडली।
केसरान्यो जामो, सलवट भरियो, अटपट दीसै थाँरी पागडली।।
हाथाँ-पगाँ रे बाँधिया डोरडा, हाथाँ महँदी राचडली।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, प्राण मल्या परमातडली।। १६९।

[३०]

गुवालन गोकल की, थाँरे लारे लग्या आवे नदलाल ।
बेगी दौड डगर कूँ लेले, तो पै डारे प्रेम को जाल ।।
हाथ मे लाल गुलाल, फेक कर डारे हाल बेहाल ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, थारो चिरजीवो नदलाल ।।१७०।।

[३१]

ककरेजी तेरो चीर कहाँ भीज्यो ।
तू कहै मैं पाँणीडो भरण गई, हम तो कहै नद कौ रीझ्यो ।।
फागण मास लाज अब कैसी, फिर याको बदलो लीज्यो ।
चतुर स्याम से फगुवा लेके, अँखियन भर मन चावो कीज्यो ।।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, दासी जाँण, दरसण दीज्यो ।।१७१।।

[३२]

मत मारो पिचकारी, मै तो भीज गई सारी ।
जो मारो तो सनमुख मारो, नातर दूँगी मै गारी ।।
सास बुरी, मेरी नणद हठीली, पिया देवै छै गारी ।
चोवा - चदन - अगर - अरगजा, केसर की पिचकारी ।।
चोली को रँग फीको पड गयो, लँहगो हो गयो भारी ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, तुम जीते, हम हारी ।।१७२।।

४–आसक्ति

[३३]

जसोदा रो प्यारो म्हाँने घणो ही सुहावे ।
जमना रे तट धेन चरावे, ऊँचे सुरा सूँ कान्हो बँसी बजावै ।
मैं मरे घर सूँ सज कर निकसी, कूँजरो पकड कान्हो बन मे बुलावे ।।
आप तो ग्वालन के ढिग बैठे, खडो होय मोय सैनन समझावे ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, मोय लेके कान्हो हिवडे लगावे ।।१७३।।

[३४]

म्हने प्यारो लागे, थारो नट वारो भेस ।
बैठ पताल कालि नाग नाथ्यो, फण-फण निरत करेस ।
जमना के नीरे-तीरे धेन चरावत, मुख पर मुरली धरेस ।।
वृन्दाबन में रास रच्यो है, गोपिन सँग रमेस ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरणाँ मे चित्त धरेस ।। १७४।।

[३५]

मेरे आँगण मे बँसी बजाय साँवरा, ख्याल-खिलोणे तने ले दूगी ।
चद सरीखा ले दूँगी खिलोणा, मोतीडा मे दूँगी मढाय ।। खिलोणे०।।
लट्टू भी ले दूँ, तने फिरकी भी ले दूँ, रेसम की डोर दिवाय ।
चालो महल माँ चौसर रमस्याँ, बाजी लेवाँगा लगाय ।। खिलोणे०।।
थे जीतो म्हाँने दासी राखो, म्हे जीताँ थे बिलमाय ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि-चरणन चित लाय ।। खिलोणे०।। १७५

[३६]

लेता जाजो जी साँवरिया ! बीडी पान की ।
काथो, चूनो, लूँग, सुपाडी, बीडी बनी नागर पान की ।
तुम नद जी के छैल छबीले, मै बेटी वृषभान की ।।
चालो महल माँ, चौसर खलाँ, बाजी लगावाँ हरि के नाम की ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, जोडी बनी हे राधे स्याम की ।।१७६।।

[३७]

माई, मै लियो है, गोविन्दे मोल ।
कोई कहे सूधो, कोई कहे मूधो, लियो है तराजू तोल ।।
लोक विरज के सब ही जॉणे, लियो बाजते ढोल ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, पायो पूरब के कौल ।।१७७।।*

[३८]

मिलता जाजो रे मुरारी, थॉकी सूरत ऊपर वारी ।।
जो थे मारो नाम नही जाणो, मारो नाम वृषभानी ।
सूरज सामी पोल हमारी, माणक चोक निशानी ।।
वृषभान घर दस दरवाजा, नही चोडे नही छानी ।
मारे आँगन पेड कदम को, ऊपर कनक अटारी ।।
थे जावो काना धेनु चरावा, मै जाऊँ जमुना पानी ।
थाँके मारे प्रीत लगी है, सारी दुनियाँ जानी ।।
'चदसखी भज बालकृष्ण छवि, हूगी चरण बलहारी ।
ऐसी प्रीत निभाजो काना, जैसो दूध मे पानी ।।१७८।।†

इस भजन के कई रूप मिलते है। सुश्री पद्मावती जी ने इसके अन्य दो रूप दिये है जिनमे से एक आगे दिया जाता है।

---

*इसी प्रकार का भजन मीरा का भी प्रसिद्ध है—

माई, मै तो लियो रमैयो मोल ।
कोई कहे छानी, कोई कहे चोरी, लियो है बजता ढोल ।।
कोई कहे कारो, कोई कहे गोरो, लियो है मै आँखी खोल ।
कोई कहे हल्को, कोई कहे भारी, लियो है तराजू तोल ।।
तन को गहना मै सब कछु दीन्हा, दीने है बाजूबद खोल ।
'मीराँ' के प्रभु गिरधर नागर, पुरब जनम का है कौल ।।

—मीराँ-माधुरी, पृ० ३३

† श्री मोतीलाल जी मेनारिया ने इस भजन को मालवी बोली का बतलाया है, किंतु श्री अगरचन्द जी नाहटा के मतानुसार यह 'विशुद्ध राजस्थानी' का है।

—राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ ११

[३९]

मिलना जाज्यो राज गुमानीं, थाँरी सूरत देख लुभानी ।।
म्हाँरो नाँव थे (जाणो) बूझो, मै छ् राम दिवानी ।
आमी-सामी पोल नद की, चदन चौक निसानी ।।

थे म्हाँरे घर आवो वसीवारा, करस्याँ बहुत लडानी ।
कराँ रसोई सोद की थाँरी, बहुत कराँ मिजमानी ।।

थे आवो हरि धेणु चरावण, (म्हे) जल जमुना पानी ।
थे नद जी कौ लाल कुहावो, म्हे गोपी मस्तानी ।।

जमुना जी के नीराँ तीराँ, थे हरि धेन चराज्यो ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, नित बरसाणे आज्यो ।।१७९।।*

[४०]

ठगना ठाकुर छै महराज, म्हाँने नित ठगवाने आवै ।
जागत डी रो लागूँ नाँही, सूती आण जगावै ।
ठडो भोजन भावै नाँही, तातो आण करावै ।।

हमरी सुणै ना, कहै आपणी, बसी मे भरमावै ।
'चदसखी' मोहन से राजी, चरणन मे चित लावै ।।१८०।।

---

* इसी प्रकार एक पद मीरा के नाम से भी प्रचलित है । पद्मावती जी का मत है कि चदसखी के ऐसे पदो को मीरा के पदों का गेय रूपातर मानना ही युक्ति-सगत होगा—चदसखी और उनका काव्य, पृ० ३७ ।

मिलता जाज्यो हो गुरु ज्ञानी, थाँरी सूरत देखि लुभानी ।।
मेरो नाम बूझि तुम लीज्यो, मै हू विरह दिवानी ।
रात-दिवस कल नाँहि परत है, जैसे मीन बिन पानी ।।
दरस बिना मोहि कछु न सुहावै, तलफ-तलफ मर जानी ।
'मीराँ' तो चरणन की चेरी, सुन लीजे सुख दानी ।।

—मीराँ-माधुरी, पृ० ६९

[४१]

कब की ठाडी सेवा कुज में, जोऊँ तिहारी बाट ।
नकौ-वचन म्हाँसू कर गया, जमुना जी के घाट ।।
मोर-मुकट थाँरे सोहणो, गल बैजन्ती माल ।
मुख पर मुरली सोहणी, थाँरा सुन्दर नैण विसाल ।।
वृन्दाबन की कुज गलिन मे, रच्यो है रास विलास ।
एक गोपी न्यारी नाँचे, तौ जी, एक मोहन के पास ।।
'चदसखी' तुमरो जस गावै, धरै तुम्हारौ ध्यान ।
सेवा कुज मे आय के तो म्हाँने दरसण दो भगवान ।।१८१।।

[४२]

रँगील्यौ गुमानी कान्ह, हीयरे बस्यौ ।
पीताबर कटि काछे काछनी, हीरा-मोती जट्यौ माथे मुकट कस्यौ ।
गहि द्रुम डार कदम तरवर की, मद मुसकाय, म्हाँरी ओर हँस्यौ ।।
'चदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, निरखि दृगन म्हाँरो जीयरो फँस्यौ ।।१८२।।*

[४३]

मथरा मत जा, गिरवर-धारी ।।
बेण बजा ब्रज-बनिता मोही, अरज करत सखियाँ सारी ।
बिन दरसण तन-मन सब ब्याकुल, अरज सुणो म्हाँरी बनवारी ।।
मथरा माँहे बसत कूबरी, बस करले जादू डारी ।
तुम तो स्याम सदा के कपटी, छाड चले सब ब्रजनारी ।।
कुब्जा कुटिल कस की चेरी, वा तो सौत लगे म्हाँरी ।
'चदसखी' दरसण की प्यासी, चरण कमल पर बलिहारी ।।१८३।।

---

*इसी से मिलता हुआ मीरा का भी भजन है —

एरी मा, नद को गुमानी म्हाँरे मनडे बस्यो ।
गहे द्रुम डार कदम की ठाडो, मृदु मुस्काय म्हाँरी ओर हँस्यो ।।
पीताम्बर कटि काछनी काछे, रतन जटित माथे मुकट कस्यो ।
'मीराँ' के प्रभु गिरिधर नागर, निरख बदन म्हाँरो मनडो फँस्यो ।।१२७।।

—मीराँ-माधुरी, पृ० ३४

मथरा जावोला, तो नद की दुहाई छै ।
बालक बैस गवन कियो मथरा, सारी या तो माधो की कमाई छै ।।
नान्हा-नान्हा कान्हा, थे तो छोटा ब्रजचद, म्हे तो थाँरे लोयणाँ लुभाई छै ।
'चदसखी' भज बालवृष्ण छवि, चरणन में लव लाई छै ।। १८४।।

५—विरह

[४५]

म्हाँरो कोण गुन्हा-तकसीर,
कुजन बन छोडी रे, माधो !
कै मै होती जल की मछलियाँ,
हरि करते असनान, चरण-रज छूती रे, माधो !
कै मै होती बाँस की बँसुरी,
मुख धरते नदलाल, अधर-रस पीती रे, माधो !
कै मै होती सीप कौ मोती,
हरि करते गल-हार, हिवडे पर रहती रे, माधो !
कै मै होती गऊ नद-घर,
चारत नद-किसोर, दरस नित पाती रे, माधो !
कै मै होती मोर की पँखिया,
'चद सखी' बलिहार, मुकट पर रहती रे, माधो ॥१८५॥*

---

*राजस्थान में इस गीत का बडा व्यापक प्रचार है। इसी का एक रूप मालवा में भी मिलता है—

कौन गुनो तपसील, कुजन वन छोरी रे, माधो !
जो मै होती प्रभु, जल की मछलिया, कृस्न करे अस्नान।
चरण छू लेती रे, माधो !
जो मै होती मोर की पँखिया, कृस्न करे सिंगार।
मुकट पर रैती रे, माधो !
जो मै होती सीप की मोती कृष्ण करे सिंगार।
हिया पे रैती रे, माधो !
जो मैं होती बिरज की रेनका, कृस्न चरावे गाय।
चरण लिपटाती रे, माधो !
'चदसखी' मेरो नाम, अँग लिपटाती रे, माधो ॥ कौन गुनो० ॥

—डा० चितामणि उपाध्याय द्वारा संकलित

माधो जी ने कैयाँ बिसारूँ जी ।
गिरधारी गोपाल लाल ने, पल-पल चितवाँ जी ।।
मो मन रहै, कह्यो न मानै, कब कौ बैरी जी ।
मात खिजाई, वृच्छ उपडया, वो दिन सालै जी ।।
एक समै हरि गउवाँ चराई, जमना के तीराँ जी ।
कालीदह मे कूद पडया हरि, नाग ज नाथ्याँ जी ।।
सात बरस को भयो साँवरो, गिरवर धार्‌यो जी ।
इदर कोप चढ्यो ब्रज ऊपर, पच-पच हार्‌यो जी ।।
गोकल ढ्ंढ, वृदाबन ढूँढ्यो, मथुरा हेर्‌यो जी ।
ऐसी वेण बजाई स्याम, म्हारो मन हर लीन्हो जी ।।
स्याम कठोर त्याग दई हम कूँ, गोपी टेरी जी ।
ले अकरूर गयो मथरा मे, कब को बैरी जी ।।
एक बेर ल्यावो ऊधो ! म्हे पूछाँ मन की जी ।
'चदसखी' पर महर करो, चेरी चरणन की जी ।।१८६।।

[४७]

साँची कह दो महाराज ! विरज कद आवोला ?
सरब सोवणी वणी रे द्वारका, मथरा की छिव नाँय ।
जब हरि छोडी मथरा नगरी, गोरस का रस नाँय ।।
ग्वाल-बाल सब सखा जु मोहे, मोहे गोकल गाव ।
विरखभान की कँवरी मोही, राधे उनका नाँव ।।
वृदाबन की कुज-गलिन मे, भई चौमासी रैण ।
पहले प्रीत करी हरि हमसे, पीछे लगे दुख दैण ।।
हम मथरा की गूजरी, तुम गोकल के कान्ह ।
'चदसखी' मोहन को मिलणा, मिला न बारम्बार ।।१८७।।

[४८]

ना जाणूँ, कद घर आसी नणदी को बीर ।
पडित आवो, सुगन मनाऊँ, जिया धरत नहिं धीर ।
हमको छोड द्वारका धाये, कहा भई तकसीर ।।

दिन नहि चैन, रैन नहि निदरा, उठत विरह की पीर ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, आखर जात अहीर ।।१८८।।

[४९]

रुत आई बोलै मोरा रे, मोरा स्याम बिना जिव डोला रे ।
दादुर-मोर-पपीहा बोलै, कोयल करत किलोला रे ।। मोरा० ।।
उतर दिसा सें आई बदरिया, चमकत है घनघोरा रे ।
रिमझिम-रिमझिम मेवला बरसै, आँगण मच रह्यो सोरा रे ।।
राधा जी भीजै रगमहल में, स्यालू की कोर-किनोरा रे ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, स्याम मिल्याँ जिव सोरा रे ।।१८९।।

[५०]

बसीवारा, हमारी गली आ जा रे ।
दिन नहि चैन, रात नहिं निंदरा, सपने मे दरस दिखा जा रे ।
तुमरी हवेली, हमरौ बरूँदो, नैणाँ सूँ नैणाँ मिला जा रे ।।
मोर-मुकट, कानन बिच कुडल, आँगण बसी बजा जा रे ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरणो मे ध्यान लगा जा रे ।।१९०।।

[५१]

मेरो मन ले गयो, बडी-बडी आँखन वारो कारो हँस के ।।
भोह कमाण, वाण जाके लोयण, मेरे हिवडे मार्‌या कस के ।
रेजा-रेजा भयो रे करेजा मेरो, भीतर देखो धँस के ।।
जतन करो, जतर लिख ल्यावो, ओषद ल्यावो घस के ।
रोम-रोम बिख छाय रह्यो है, कारे खायो डस के ।।
जो कोई मोहन आण मिलावे, गले मिलूँगी हँस के ।
'चदसखी भज बालकृष्ण छवि, क्या री करूँ घर बस के ।।१९१।।*

---

*इसी प्रकार का मीरा का भी पद है—

बडि-बडि अँखियन वारो साँवरो, मो तन हेरौ हँसिकै री ।।
हौं जमुना जल भरन जात ही, सिर पर गागरि लसिकै री ।
सुदर स्याम सलोनी मूरति, मो हियरे में बसिकै री ।।
जतर लिखि ल्यावो, मतर लिखि ल्यावो, औषध ल्यावो घसिकै री ।
जो कोऊ ल्यावै स्याम वैद को, तौ उठि बैठो हँसिकै री ।।
भृकुटि कमान, बान वाके लोचन, मारत हियौ कसिकै री ।
'मीराँ' के प्रभु गिरिधर नागर, कैसे रहौं घर बसिकै री ।।५३।।

—मीराँ-माधुरी, पृ०१३–१४

[५२]

जा रे मोहन तोसे प्रीत लगाई, समझ देख मन मे पिछताई ।
जे मोहन थाने ऐसा जानती, पेली मचरको लेती लिखाई ।।
आँगन मे बैर लेती लिखाई बीच मे लेती श्री गगाजी माई ।
थे हरत हरे अण वह बिछवा, सरस चोली, चुदरी रँगाई ।।
इतनो पहिर गई मोहन पै, जोबना की ऊँची अदा बताई ।
अपनी गरज के कारण साँवरा, बैयाँ पकड के मोहि लपटाई ।।*
गरज निकस गई जब मोहन की, मुखडे न बोल्यौ, मोसो अँखियाँ छिपाई ।
'चदसखी ब्रजराज साँवरा, हरि के चरण मोकूँ लिपटाई ।।१६२।।

[५३]

कोई कहियो रे मोहन आवण की ।
आप तो जाय द्वारका छाये, हमको जोग पढावण की ।।
आप न आवे, पतियाँ न भेजे, बात करे ललचावण की ।
दोऊ नैण कह्यो नही मानत, घटा उमड रही सॉवण की ।।
दिल चाहत है उड जाय मिलूँ, पर पख नहिं उड जावण की ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरण कमल लपटावण की ।।१६७।।

[५४]

ए री, मै खडी निहारूँ बाट ।
चितवन चोट कलेजे बह गई, सुदर स्याम सुघाट ।
मथरा मे कर राखी कुबजा, बणिये की सी हाट ।

---

*मीरा के निम्नलिखित भजन में कुछ उलट-फेर कर इसे चदसखी के नाम से प्रचलित कर दिया जान पडता है । इसमें मीरा का सा भाव-गाभीर्य नहीं है—

कोई कहियो रे, प्रभु आवन की, आवन की मन-भावन की ।।
आप न आवै, लिख नहिं भेजै, बॉण पडी ललचावन की ।
ए दोउ नैण कह्यो नहिं मानै, नदिया बहै जैसे सावन की ।।
कहा करूँ, कछु नहिं बस मेरो, पाँख नहीं उड जावन की ।
'मीराँ' कहै प्रभु कब रे मिलोगे, चेरी भई हूँ तेरे दाँवन की ।।

—मीराँ-माधुरी, पृ० ५६

केसर-चदन लेपण कीन्हा, मोहन तिलक ललाट
हमरी पिलँग जडाऊँ छोड्या, बणिया पीले पाट
क्याँ पर राजी भयो साँवरो, चेरी के नहि खाँट ।
अजहूँ न आयो कँवर नद कौ, क्याँ रे लाग्यो चाट ।
छाँड गयो मझधार साँवरो, बिना अकल रो जाट ।
तुमरे बिन गोपी ब्रज की सब, व्याकुल भई विराट ।
'चदसखी' ने दरसण दीज्यो, कीज्यो आणँद-ठाट ॥१६४॥

[५५]

बोल-बोल, म्हाँरा नद जी रा लाल, बोल्याँ सरसी रे ।
मोहन, मुखडे बोल ॥
बोल-बोल, म्हाँरा जनम सुधारण, बोल्याँ सरसी रे ।
साँवरा, मुखडे बोल ॥
मोर-मुकट पीताम्बर प्रभु जी, मुख पर मुरली सोहै रे ।
बजा बँसरी तीन लोक मे सबकौ मनुआ मोहै रे ॥
मोहन, मुखडे बोल ॥
आप तो जाय द्वारका छाये, हमको जोग पठायो रे ।
आप न आये, पतिया न भेजी, कुण मिलायौ रे ॥
साँवरा, मुखडे बोल ॥
सोलह सहस तो गोप्याँ त्यागी, कुबजा सूँ नेह लगायो रे ।
'चदसखी' ललिता यूँ भाखै, हरि नहि आयो रे ॥
मोहन, मुखडे बोल ॥१६५॥

[५६]

परसू जो पिया आवण कह गये, कद आवैगी वैरण परसूँ ।
जिय चाहत है, उड जाय मिलूँ, मोसे उड्यो न जाय बिना पर सूँ ॥
घनश्याम नही, बरखा रुत आई, दुख देत पपीहा ऊपर सूँ ।
घन गरजै, बिजली चमकै, मेह कहे बरसूँ बरसूँ ॥
कोइ आज कहै, कोई काल कहै, कोई आय कहै परसूँ परसूँ ।
'चदसखी' पर किरपा कीज्यो, विनती कहियो श्री हरि सूँ ॥१६६॥

[५७]

लिख भेजूँ सदेसौ, आवो म्हाराँ बलमाँ रे देस ।
लिखूँ री पतियाँ, भेजूँ री बतियाँ, कागद काली रेख ।।
चपा फूली, मरुवो फूल्यो, फूल रह्यो चहुँ देस ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, साँवरिया अवधेस ।। १९७ ।।*

[५८]

पाती सखी ! माधो जी की आई ।
आप न आये स्याम मनोहर, ऊधव हाथ पठाई ।।
बिन दरसण व्याकुल भयो जिवडो, नैनन नीर बहाई ।
मन सकुचाय ओट घूँघट की, पतियाँ छतियाँ लगाई ।।
कपट की प्रीत करी मनमोहन, मोरी सुध बिसराई ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छबि, दरसन बिन अकुलाई ।।१९८।।

[५९]

साँवरिया ने कहज्यो समझाय, उद्धव जी सुणजो म्हाँरी बात ।।
जनम भयौ मथरा तजी, ए जी प्रभु ! पाछै लियौ उत बास ।
ग्वाल-बाल सब गोपिन, ए जी प्रभु ! नितप्रति रहत उदास ।।
जमना तो जल उमग नही, ए जी प्रभु ! कुज रहे कुमलाय ।
'चदसखी' की बीनती, ए जी प्रभु ! तन री तपत बुझाय ।। १९९ ।।

[६०]

वो दिन क्यूँ नही चितारो ? वो दिन० ।।
कुब्ज्या राजा कस घर दासी, नित उठ देती बारो ।
हाथ कटोरो, चदण को मुठियो, घसती रो गयो जमारो ।।
बनरावन मे चुगती लकडियाँ, चुग-चुग करती भारो ।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, आखर श्याम हमारो ।।२००।।†

---

*इस भजन के उत्तरार्द्ध में अर्थ सामजस्य नहीं है—"साँवरिया अवधेस" अर्थहीन है ।

†चदसखी के सकलन की मुद्रित प्रतियो में उपर्युक्त भजन का यही रूप मिलता है, किंतु श्री मनोहर शर्मा ने इसे अशुद्ध बतलाया है और लिखा है—राजस्थानी

[६१]

कुछ दोस नही कुबजानै, बीर, आपणो स्याम खोटो।
आप न आवै , पतियाँ न भेजै, कागदरो काँई टोटो ।।
बिखरी बेल के विख फल लागै, काँई छोटो, काँई मोटो।
जमना रे नीरे-तीरे धेन चरावै, हाथ चँदण रो सोटो ।।
कुबजा चेरी कसराय की, वो छै नदजी रो ढोटो।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, कुबजा बडी हरि छोटो ।। २०१ ।।

[६२]

ऊधो, वेग्याँ जाज्यो जी,
कह्ज्यो म्हाँरे साँवरा ने, महलाँ आज्यो जी।
कबका गया, म्हाँरी सुध ना लई।
चाँदणी सी रात, म्हाँरी बैरण भई ।।

जन-साधारण में यह पद इस प्रकार गाया जाता है—

थारो स्याम, कर्यो अधिकारो, ए कुब्जा ! वै दिन क्यूँ ना चितारो ।।टेक।।
कुबजा दासी कसराय की करती भारो-झाडो ।
हाथ कचोली चंदण की मुठियो, घसती को गयो जमारो ।।
बिनरावन में चुगती लकडियाँ, चुग-चुग बाँध्यो भारो ।
हाथ कचोलो घर-घर फिरिया, काइ घाल्यो नहीं तेल उधारो ।।
कुबजा चेरी कसराय की, बो नद जी को दुलारो ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, आखर स्याम हमारो ।।

—राजस्थान भारती, जनवरी, १९५६

*इसी से मिलता हुआ मीरा का भी भजन है, जो इस प्रकार है—

कुछ दोष नहीं कुबज्या नें, बीर अपना श्याम खोटा।
आप न आवे, पतिया न भेजे, कागद का काँई टोटा ।।
नौलख धेनु नद घर दूधै, माखन का नहीं टोटा।
आप ही जाय द्वारका छाये, ले समदर की ओटा ।।
कुबज्या दासी कसराय की, रे नद जी के ढोटा।
'मीराँ' के प्रभु गिरधर नागर, कुबज्या बडी, हरि छोटा ।।

—चदसखी और उनका काव्य, पृ० ४८

सांवण मास सुहावणा, बागाँ कोयलिया बोलै ।
पापी रे पपइया, मेरो प्राण क छोलै ॥
कोयल वचन सुहावणा, बोलै अमरित वैण ।
कहो काली कैसे भई, (तेरे) किस विध राते नैण ॥
कृष्ण पधारे द्वारका, जब से बिछुडे मिले न ।
कलप-कलप काली भई, (मोरे) रोय-रोय गम गये नैण ॥
'चदसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि-चरणाँ चित धारॉ जी ।
साँवरो बालम फेर मिलै, म्हे तन-मन वारॉ जी ॥ २०२ ॥

[६३]

ऊधो, नदलाल जी से, जै गोपाल कीज्यो रे ।
हम कूँ तज दी जादूराई, कूबरी वाके मन भाई,
हम तो सब जोगण बण बैठी, अब तो राजी रीज्यो रे ॥
हम तो लागे विख सी खारी, कुबरी लागै भौत पियारी,
स्याम म्हाँरी प्रीत न जाणी, दासी कूँ पतीज्यो रे ।
'चन्दसखी' चरणन की दासी, एक बार फिर आके दरसण दीज्यो रे ॥२०३॥

मालवी-निमाड़ी

१—विनय

त्रिनती

[१]

सुनो दीनानाथ, मैं भोली फिरत हूँ,
बिन भगति से मोये तारो, ओ राम!
मदर जाता म्हारा पगल्या दुखे,
घरे-घर फिरवा मे राजी, ओ राम! सुनो०।।
उपास करूँ तो म्हारो जीवडो काँपे,
भोजन की तैय्यारी, ओ राम!
भजन करूँ तो म्हारो मुखडो दुखे,
निन्द्या करवा मे राजी, ओ राम! सुनो०।
साद्-सन्यासी ने आवताँ देखी,
झपट किंवाड लगाती, ओ राम!
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि,
हरख-निरख गुण गावती, ओ राम! सुनो०।।२०४।।

[२]

श्रीकृष्ण त्हारो नाम, म्हाँरी अरजी सुन लीजो, प्रभु जी! म्हने दरसण झट दीजो।
फूल कमल से चरण त्हारे, नाथ! म्हारा हिरदा मे लिख दीजो।।
भव सागर जल-नीर अपार नाथ! मोये डूबन न दीजो।
काठ की नैया डगमग होवे, नाथ! मोरी बैयाँ पकड लीजो।।
धरमराय जी लेखो माँगे, नाथ! जरा दसकत कर दीजो।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, नाथ! मोये पार लगा दीजो।।२०५।।

[३]

हरि आये बिदुर घरे पावणाँ, हरि आया गरीब घरे पावणाँ।
कूरा सा भात, गवाँ का फलका, बिन आदर कँई काम का? हरि आये०।।
पतली सी दाल, बेजड की रोटी, रुच-रुच भोग लगावणा।
ऊँचा साँ मेलाँ, हिंगलू का ढोल्या, बिन आदर कँई काम का? हरि आये०।।
टूटी सी खटली, फूटी सी टपरी, प्रेम सहित हरि पोढना।
'चदसखी भज बालकृष्ण छवि, हरख-हरख गुण गावना ।। हरि आये०।।२०६।।

[४]

सखी, आज तो आनद भयो, कृष्ण आये पावणाँ।
कृष्ण आये पावणाँ, गोपाल आये पावणाँ ।। सखी० ।।
चाँद सा उजास जैसा, दीप का सँजोवणाँ।
सूरज सामी उगिया, सब जग को जगावणाँ ।। सखी० ।।
फूलन की सेज बिछाई, फूलन का बिछावणाँ।
फूलन-फूलन हो गई रे, आँगण लगे सुवाबणाँ ।। सखी० ।।
ब्रिदावन मे रास रच्यो है, गोपियाँ बुलावणाँ।
कालीदे में नाग नाथ्यो, निरत तो करावणाँ ।। सखी० ।।
लाड, पेडा, सरस जलेबी, घेवरिया छटावणाँ।
ताता-ताता मालपुआ, भोग तो लगावणाँ ।। सखी० ।।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरण चित लावणाँ।
चरण कमल मे लियो आसरो, चरणाँ मे सीस नमावणाँ ।। सखी०।।२०७।।

[५]

ले लोट्यो बउ न्हावा चाली, सासँू ए मँु मचकोड्यो जी।
राम नाम, सिरी कृष्ण जी।
त्हे सासुजी, रतजगे जाजो, म्हे मँदरिये जावाँ जी।
त्हे सासू जी, गगाजल पीवो, म्हे हरिचरणामृत पीवाँ जी ।। राम० ।।

थ्हें सासुजी, लापसी जीमो म्हे परसादी पावाँ जी।
सुण-सुण ए म्हारा पूत सपूता, थ्हारी बउ मदर जावे जी ।। राम० ।।
सुण-सुण ए म्हारी माय सपूती, करणी पार उतरणी जी।
बैंकुठा से बैंवाण आया, बउ बैंकुठाँ चाली जी।। राम० ।।
पेलो पायो सासू ने सार्यो, बउवड मोये ले चालो जी।
थ्हें सासुजी, बन का बागल, सिदनाथ मे ऊँदे माथे झूलो जी ।। राम० ।।
दुसरो पायो देराणी सारयौ, भाभीजी मोये ले चालो जी।
थ्हे भाभी जी लक लडावन, लक लडाता रीजो जी ।। राम० ।।
अगन्यो पायो नणदल सारयो, भावज मोये ले चालो जी।
थ्हे बाई जी, चुगली खोरा, चुगली करता रीजो जी ।। राम० ।।
चोथो पायो सायब सारयो, गोरी मोये ले चालो जी।
थ्हे सायब जी, नगरी के राजा, राज करताँ रीजो जी ।। राम० ।।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, बउ बैंकुठाँ चाली जी।
राम नाम, सिरी कृष्ण जी ।। २०८ ।।

उद्बोधन

[६]

सजा सुमरण कर ले मन गेला, सजा सुमरण कर ले !
साँज-सवेरे और दुफेरे, तीन बखत हरि को भज रे ।। मन० ।।
चोरी, चुगली और पर-निंद्या, इन तीन कूँ तज दे रे।
जो तू अपनी मुगति चावे, हरि के दुवारे चल रे ।। मन० ।।
काय की नाव, काय को बेडा, कौन लगावे बेडा पार रे।
सत की नाव, धरम को बेडा, हरि लगावे बेडा पार रे ।। मन० ।।
काय को दीवलो राम जी, काय की बाती, काय को घिरत सँजोयो रे ?
सोना को दीवलो राम जी, रूपा की बाती, सूर्या को घिरत सँजोयो रे ।।
माटी को दीवलो राम जी, रूई की बाती, गैय्या को घिरत सँजोयो रे।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरण बलिहार रे ।।
मन गेला, सजा सुमरण कर ले ।। २०९ ।।

[१७]

नईं-नइ रे भरोसो जिंदगानी को।
तू मत कर जोर जुवानी को ।।
यो ससार हाट को मेलो रामा, लख आवत लख जावत है।
यो ससार ओस को मोती रामा, पवन लगे ढुल जावत है।। नईं० ।।
यो ससार बोर की झाडी रामा, माया-जाल उलझावत है।
यो ससार भाई-बदौ को रामा, काम पडे नट जावत है।। नईं० ।।
यो ससार माय-दौलत को रामा, चोर पडे लुट जावत है।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरण चित लावत है।। नईं०।।२१०।।

२—लीला

बाल-लीला

[८]

बसी वालो मचल रयो म्हारे अँगणा।
आँगणे देखूँ तो कान्हो पाँच बरस को, घर में देखूँ तो कान्हा झूले पालणा ।।
बसी वालो मचल रयो म्हारे अँगणा ।।
इ बसीवाला का तीन ठिकाना, गोकल, मथरा ने बरसाना।
इ बसीवाला के तीन लुगायाँ, राधा, रुक्मण ने सतभामा ।।
बसी वालो मचल रयो म्हारे अँगणा ।।
इ बसीवाला के कोई मती नौतो, खात्रे माखण मिसरी ने माँगे दखणा।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरण गुण गावणा ।।
बसी वालो मचल रयो म्हारे अँगणा ।।२११।।

[९]

म्हारा कृष्ण कन्हैया की कामरिया, कणी राखी रे छिपाय ?
कणी गुम राखी रे छिपाय ?
झिरमिर-झिरमिर मेवलो बरसे, धेनु चरावा जाय।
कीजो रहारा गुवाल ने रे, म्हारो कृष्ण उघाडो जाय ।।
कणी गुम राखी रे छिपाय ।।म्हारा०।।
ग्वाल-बाल सब कहे, जसोदा! कृष्ण चले बे चाल।
लकडी चोरे, फाडे कामरिया, देवे जमना मे डाल ।।
कणी गुम राखी रे छिपाय ।।म्हारा०।।
कहे जसोदा सब मडली से, कामली दो नी गुवाल।
कैसो झगडो कियो कृष्ण ने, नद जी हुआ बेहाल ।।
कणी गुम राखी रे छिपाय ।।म्हारा०।।
'चदसखी' की बीनती रे, नाँचे दे-दे ताल।
म्हारा कृष्ण कन्हैया की कामरिया, कणी राखी रे छिपाय ?
कणी गुम राखी रे छिपाय ।। म्हारा ० २१२ ।।

तुमे कोई टेरत है घनश्याम, तुमे कोई टेरत है नदलाल।
बाली रे बाली उमर की छोटी, राधे इ राधे नाम।। तुमे कोई० ।।
पेर पीताबर, ओढ नीलाबर, राधे राणी वाको नाम।
मुख की सोबा काँ लग बरणू, जैसे उगा है भान।। तुमे कोई० ।।
बिंद्रावन की ओर गई है, लेवे तुमारो नाम।
'चदसखी' भज बाल की सोबा, हरि के चरण मेरो ध्यान।। तुमे कोई० ।। २१३।।

पनघट-लीला

[११]

म्हारो बसीवाला, ठाडी रहूँ किधर जाऊँ रे।।
जल जमुना को निरमल पानी, कहो तो गगरी भर लाऊँ रे।
हाथ मॉय कगन, पॉव मॉय पिजन, रमक-झमक मदर जाऊँ रे।।
सासु सपूती, ननद हठीली, कृष्ण जी घणा नखराला।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरणो मे शीश नवाऊँ रे।। २१४।।

[१२]

नदलाल, गागर भर दे रे। गोकुल मे म्हारो घर छे रे।।
गागर भर दे, सिर पर धर दे, चार कदम म्हारा सँग चल रे।
गगा, जमना हे तिरवेणी, मॉय है मगर को डर रे।।
यूँ मत जानो फिरे अकेली, सात सहेल्या म्हारा सँग रे।
यूँ मत जानो फिरे कुँवारी, श्री कृष्ण म्हारो वर रे।।
यूँ मत जानो फिरे कौन ग्राम की, बरसानो म्हारो घर रे।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि चरणो मे मर रे।। २१५।।

दान-लीला

[१३]

बरसाने से चली गूजरी, कर सोला स्नगार
हरि हर, कर सोला स्नगार।

नख-सिख मे वाने गेहनो पेर्यो, पेर्यो जी नौसर हार।
पेरी जी वाने कठ दुलडी ।।
एक चचल गूजरी जी, दई बेचन को जाय।
आगे मिल गये साँवरिया जी, घाट रोक्यो आय ।।
माखन वाको सभी लुटायो, तोड्यो जी नौसर हार।
टोडी है वाकी कठ दुलडी ।। २१६ ।।

[१४]

तोबदान पतरसिलाडी चमके, सिग नागनी हो।
लाल बना को सोवे ने काछनी हो ।।
रादा सूबेदार बनी।
इन्दर भवन से उतरी जसोदा, आँगण भीड घणी ।।
कौन देस से आये ये पिलगवा, को अपणी-अपणी।
नदराय तो कुछ नईं जाणे, घर-घर की गोपणी ।।
भोत दिनाँ माखन खायो अब करो कुन्दी मुखधर बासणी।
'चदसखी' या छबि निरखी सूरत साँवली घणी ।। २१७ ।।

[१५]

काना जी पूछे—ये गुवालन, त्हारी मटकी मे कईं-कईं ?
म्हारी मटकी मे दूध छे काना, त्हारे काँई पडी।
चले जावो, बन के बासी, हो, चले जावो मुरली वाले ।। त्हारे काँई पडी०
काना जी पूछे—ये गुवालन, त्हारी मटकी मे कईं-कईं ?
नही हे मूँडा पे मूँछ, चले जावो बन के वासी। हो चले जावो०।
कमर त्हारी लचलची, ये एडी अडँता केस।
भँवर त्हारा तीन कमानी, मोया चारी देस ।।
गुवालन झुमकावाली, बाजूबद बेरला वाली।
अजन बिना अँखियाँ वाली, देखन को तू भोत रूपाली ।।
ओढन को बासती साडी, ए झीना घूँघट वाली।
मै पूछूँ, परनी कै कुँवारी ।।
कोन का थे छो डीकरा, ने कईं त्हारौ नाम ?
दान लेवानी खातर होय तो, आयवो गोकुल गाँम।
चले जावो, बन के वासी ०।।

वँद बाबा ना डीकरा, श्रीकृष्ण म्हारो नाम।
दान लिया बिन जाने नी दूँगा, नद बाबा नी आन ।।
गुवालन झुमका वाली० ।।
त्हारा घर काना, नौलख गऊआ दुहे छे म्हारे बाखड जी ।
मै हूँ दासी कस राजा की, दूँगा थापड जी ।।
चले जावो बन के वासी० ।।
त्हारे हे अलबेली गुवालन, त्हारो हे बडो गुमान।
दान लिये बिन जाने नी दूँगा, ऊबी उतारू मान ।।
गुवालन झुमका वाली० ।।
तू हे कान्हा गाँव का ठाकर, मै हूँ चाकरडी।
त्हारे-म्हारे हेत घणा रे, दूध मे साकरडी ।।
'चदसखी' नी विन्ती ने, सुनजो चित्त लगाय।
राधा-कन्नैया को झगडो ज गावे, बैकुठ नो जाय ।।
गुवालन झुमका वाली ०।।२१८।।

वैद्य-लीला

[१६]

डस खायौ कनैयो काली नाग, राधे जी की ऊँगली मे ।
एक सखी तो पानी पावे, दूजी ठाडे वाय ।।
तीजी चली नद भवन को, लायी बेद बुलाय।
राधे जी की ऊँगली मे कैसे खायौ रे कनैयो काली नाग ।'
गढ गोकल से चले बेद जी, आये नद किसोर।
मोर पीख हाथ मे लीना, गेरी सेर चढाय ।
एक सखी यूँ कर बोली, सुनयो नद किसोर।
जो जीवे तो कुँवर लाडली, त्हाने ही दूँ परणाय ।।
'चदसखी' मोहन को मिलनो, मिले नी बारबार।
यो मोहन अलगूँजा वालौ, ले गयौ प्रीत लगाय ।।२१९ ।।

[१७]

बन गयो बेद लाडलो गिरधारी। बन गयो वेद साँवलो गिरधारी ।।
बिद्रावन की कुज गलियन मे, देखत डोले नारी।
एक गुवालन नई उठ बोली, देखत जइय्यो लाला नबज हमारी ।। बन०।।

नबज पकड के कहे साँवलो, सरद-गरम है भारी।
एक दवा तो असी दऊँगा, मिट जायगी री गुवालन सरद तुम्हारी ।। बन०।।
आज साँवला जावाँ नी दऊँगी, खातर कराँ तुमारी।
खीर-खाँड का भोजन परसू, सोवाँ ने दऊँगी लाला ऊँची सी अटारी ।।बन०।।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि-चरणौ बलिहारी।
दखणा मे दऊँगी, लाला आछी सी साडी ।। बन गयो० ।।२२०।।

[१८]

बनि आये बेद मोहन गिरधारी।
वृंदाबन की कुज-गलिन में, डोल रही इक नारी।
उततें आये कुवर कन्हैया, देखो न हो लाला नबज हमारी।
उँगली पकड वाकौ पौंचौ पकड्यो, देखन लागे नाडी।
ताप तेजरो कई तन राधे, पीर उठे राधे कँमर भारी।
बाय बडग और सौप कासनी, सोठ की पुडिया न्यारी।
एक जडी जगल की लाऊँ, हट जावेगी राधे पीर तुम्हारी।
आज लला तोहे जाने न दऊँगी, खातर करूँ तुम्हारी।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, आज रहूँगी लाला शरण तुम्हारी ।।२२१।।

मनिहार-लीला

[१९]

श्री कृष्ण चद्र मणिहार बने, वृखभान भवन कों ल्याये चुडियाँ ।।
वृंदाबन की कुज-गलिन में, कैत फिरै कोई पैरईदो चुडियाँ।
गोरा बदन राधे जी ढाल्या, हमकै पैरइयो हरी चुडियाँ ।।
उँगली पकड के पौचौ पकड्यो, हँस-हँस मोडी गोरी बहियाँ ।।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरण गावो भइया ।। २२२ ।।

वशी-वादन

[२०]

ऐसी हँस गुण बसी बजाय, मोही रे मोहे नद लाला।
ऐसी निरगुण बसी बजाय, मोही रे मोहे नदलाला ।।

छीकत लीनो बेडलो, आँगन बोल्यो काग ।
कै तो सिर कीय गागर फूटै, कै मिलै मदन गोपाल ।।
मोही रे मोहै नदलाला ।।
पनघट ऊपर जायके, भर-भर दो ढुलकाय ।
पवन चले, फुसवारी चले, मेरौ घूँघट जाय उडाय ।।
मोही रे मोहै नदलाला ।
म्हारे पिछवाडे आई के रे, हेरी बसी बजाय ।
मधुरी बसी बजाय ।
म्हारा मन मे थर हर काँपू, सासू-ननद कौ बास ।।
मोही रे मोहै नदलाला ।।
'चदसखी' मोहन कौ मिलनौ, मिलै नी बारबार ।
यो मोहन अलगूँजा वाला, ले गयौ सँग लगाय ।।
मोही रे मोहै नदलाला ।। २२३ ।।

[२१]

बजी-बजी , मुरली बजी, जल-जमना के तीर, सजनी ।
जल-भरने कैसे जाऊँ सजनी, उपे मदन मुरार, सजनी ।।
ऊ घाट कैसे जाऊँ सखी, ककरीली गवे हो, सजनी ।
पीछे से आय मोरी मटकी पटकी, मोसे माँगे दान, सजनी ।
घर जावे दो कृष्ण मुरारी, मोड हो रही , सजनी ।
घर कैसे जावो राधे , देना दही को दान ।
'चदसखी' भज बाल कृष्ण छवि, हरि भज राधे श्याम ।।सजनी०।। २२४ ।।

खडिता

[२२]

साँचा बोलो जी कुज-बिहारी, त्हाने कणी बिलमाया ब्रजनारी ।।
बिडिया तो चाबी ने होठ रचाया, नेनाँ मे सुरमो सारचो जी ।
मुरली तो तम कॉं भूली आया, हाथो की खोई रे अँगूठी ! साँचा०।।
उलटा से सुलटा कुडल पेरचा, लटिया बिखर गई सारी ।
जामा का तो कसना ढीला, बाजू की लड टूटी ।। साँचा०।।

कुब्जा को तो रूप घणो है, हूँ कँई तन की काली।
तम हो लाल जी अतर का कपटी, तो मैं हूँ मन की भोली ।। माचा०।।
हमने दुवई बाबा नद मोहन की, तम हो प्रान की प्यारी।
'चदसखी' की यही बीनती, हरि चरणाँ बलिहारी ।। माँचा० ।। २२५।।

होली

[२३]

बाबा नद के द्वार मची होली ।।
कै मन लाल गुलाल मँगई रे, कै मन केसर घोली ?
दस मन लाल गुलाल मँगई रे, दस गाडी केसर घोली ।।
अपना-अपना घर से निकसी, कोई साँवलि कोई गोरी।
अईं रे आया कृष्ण कन्हाई, अईं से आई राधा गोरी ।।
घुटना कीच हुयौ आँगन मे, लै-लै रँग-रँग झोरी।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, बाबा नद खडे पौरी ।।२२६।।

रुक्मिणी-परिणय

[२४]

रथ लईन आया श्याम, रुक्मणी देख-देख-देख।
माथे मोर मुकट, मकराकृत कुडल, कुडल की छवि प्यारी लग ।।
तू देख-देख-देख ।।
गल बिच सोभे मोतियन माला, हीरा प्यारी लग।
तू देख-देख-देख ।।
अँग बिच सोभे जरी कौ जामु, केसर की छवि प्यारी लग ।
तू देख-देख-देख ।।
हाथ बिच सोभे मोतियन कँगना, उँगली की छवि प्यारी लग ।
तू देख-देख-देख ।।
सँग मे सोभे राधा प्यारी, जोडी की छवि प्यारी लग ।
तू देख-देख-देख ।।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, मुरली की धुनि प्यारी लग ।
तू देख-देख-देख ।। २२७ ।।

राम-लीला

[२५]

धीरे चलो मै हारी, ओ सियावर! धीरे चलो मै हारी।
रात दिनो को चलनो बुरो है, ककर लगे अति भारी।
पॉवो की पीजन तप गई लछमन, धूप पडे अति भारी ।। ओ सियावर०।।
सासू केकँई को कँई रे बिगाडयो, दुखडो दियो अति भारी।
'चदसखी' राजा जनक घरे जनमी, जन्म्या से क्यो नी मारी।।
ओ सियावर० ।।२२८।।

प्रह्लाद-लीला

[२६]

क्या करूँ मेरी माता री, पडत के घर जायके!
पेले तो मेरे गुरु जी मारे, लडको के सँग बुलाय के।
मार-मार मेरी चाम हिडावे, सारा बदन उघाड के ।। क्या करू०।।
पाछे से मेरे पिता जी मारे, ऊँडी मुसकी बँध के।
एक पाँव से खडो रखावे, पडत के घर जाय के।। क्या करूँ०।।
माता तो मेरी घणी पियारी, लड्डू दिये जेर के।
वा तो मुउको मारन बैठी, साय्य करी भगवान ने ।। क्या करूँ०।।
भुवा तो मेरी नाम होलका, ले बैठी हाय अगन मे।
वा तो मुउको जलावे बैठी, साय्य करी भगवान ने ।। क्या करूँ०।।
मै तो बाँचू ज्ञान की पोथी, पडत नइँ पढाय के।
रामनाम तो कदी नी भूल, नइँ भूल् भगवानने ।। क्या करूँ०।।
उस नगरी मे कदी नी रेणाँ, पिता से बैर बसाय के।
'चदसखी' की करूँ बीनती, राम ही राम पुकार के।। क्या करूँ०।।
पेह्लाद ठाढो भगति वालो, हरि के चरण चित लाय के।
क्या करूँ मेरी माता री, पडत के घर जाय के ।। क्या करूँ०।।२२६।।

३—आसक्ति

प्रेमासक्ति

[२८]

पल-पल मे याद आवे रे, काना की बातडली।
छिन-छिन मे याद आवे रे, मोहन की बातडली।।
एक दिनाँ म्है गई जल भरने, साते सातडल्ली।
हाथ जोड के करूँ बीनति, पड गई रातडल्ली।।
एक रैन सपना मे सूती, साते सातडल्ली।
आनचक मेरी बइय्याँ मरोडी, खुल गई आँखडल्ली।
मोर मुकट पीताम्बर सोवे, मुख पे बाँसडल्ली।
'चदसखी' प्रभु की छवि निरखे, या छवि साँवडल्ली।।२३१।।

[२९]

हिरदा मे बस गई साँची, हो गोपाल थारी झाँकी।।
या झाँकी थारी अद्भुत बाँकी, का ताकत विधना की।
ऐसे उपमा फिर नही आवै, सारद लिख-लिख थाकी।।
मोर मुकट कुडल कौ लटकौ, सिर पर कलँगी टाँगी।
माधुरी राग मुरली मे गावे, गले माल मोत्याँ की।।
कोट भानु अरु चद्रमा, करे खवासी थाँकी।
दोई कर जोड कहूँ कर जोडी, रखो लाज बाना की।।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, बेद भरे थारी साकी।
झाँकी देख तन-मन लिपटानी, लोक-लाज सब न्हाँकी।।२३२।।

[३०]

कैसे आऊँ रे साँवरिया, दूर त्हारी नगरी।
त्हारी नगरी मे जमना बहत है, थाँ बह जाऊँ सगरी।।
त्हारी नगरी मे फाग बहुत है, रोकै गुजरिया सब डगरी।
भर पिचकारी मारत अँग पर, भीजत चुनरी औ बघरी।।

थ्हारी नगरी मे बसी बजत है, भूल जाय सुध-बुध सगरी।
'चन्दसखी' भज बाल कृष्ण छवि, लूट लेय माखन-गगरी ।।२३३।।

[३१]

लेता जाजो जी, साँवलिया बीडी पान की।
काथो, चूनो, लौंग, सुपाडी, बीडी बनी जी पाका पान की ।।
इन बिडियन मे सब जुग मोह्या, बेटी मोही जी बृखभान की।
आजो जी साँवलिया अपन चौपड खेलाँ, बाजी लगाँवा गुरु-ग्यान की ।।
हारूँ तो प्रभु दासी तुम्हारी, जीतूँ तो बेटी बृखभान की।
'चदसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरण गुण-गान की ।।२३४

पंजाबी

[१]

साडरा सोहना सजन यार।
मोर मुकट पीताम्बर राजत, गल फूलो दे हार ।।
घूँघर वारीया कालीया जुल्फै, सकल सुखो दा सार।
रँगभीनी मिठबोलन ऊपर, जिद कीनी बलिहार ।।
ए ही मिस कीनी याजेही ऊपर, करदा मोहन प्यार।
'चदसखी' प्रभु जग उदी जीवन, श्री रावे जी प्रान-अधार ।।२३५।।

[२]

सैंयो प्रेम दी कूका मचियाँ मचियाँनी।
नेह दरद दीदा भई दारू, इसक अवाजै सँचियानी ।।
इख दीरे लखदा लै याँ साढे,
लोका जिनि दीगति मति कच्चियानी।
'चदसखी' हित बालकृष्ण छवि,
जे मनमोहन रँग रचियाँनी ।।२३६।।

[३]

लगनि मडी लगी, हो नन्द-ग्वाले।
घायल करि-करि मायल कीन्ही,
नैननू से रतनाले ।।
दै मनू दरस, दरद की दारूँ,
मोहन मुरली वाले।
'चदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु,
इसक घने घर घाले ।।२३७।।

तेरी खातर स्यामा वे, मैं योगिन होइयाँ।
अँग-अँग छाई स्यामा वे, मैं मल-मल रोई।
प्रीत लगी तन वारी ।।
के घर जावाँ स्यामा वे, मैं केन्हूँ आखाँ।
प्रीत लगी स्यामाँ, दिल अंदर राखाँ।
विरहो दी अगनि करके जारी ।।
तैं तो स्यामा वे, मेरी सुध हू न लीनी ।।
व्याकुल करके स्यामा वे, मैं कमली कीनी।
'चंदसखी' बलिहारी ।।२३८।।

पी० एस० यू० पी०—ए० पी०— ३१६ जनरल (पब) १९५८—३,००० ।